नहीं चाहत यहसब महान गुण होतहै तथा मदादि जो वड़े दोष सो सुबोध नाम सुन्दर ज्ञान के प्राप्तभये सहजही गये नाम नाश होतहैं द्वैत नाम शरीरादिमो सत्यबुद्धि सो साधु के सेवनकरि दूर होतहै तब श्रीरघुबर चरणमो रति नाम प्रीतिलगैहै तबदेहतें उत्पन्न जो विकार नाम नाना क्लेशसो त्याग होतहै तब भूलो जो अपनो स्वरूप जेह के भूले तें संसार प्रवाह में बह्यो तेहकों पहिचानकरि वालो अनुराग होतहै जब अपने स्वरूप मो अनुराग भयो सो तब जगत तें विलक्षण देखिपरत है अर्थात् वाको आचरण मसुक्ष सुख विषई जीवते विलक्षण बनत है तेहि विलक्षणता कों देखावत हैं संतोषसमता शीतलता दमनाम इन्द्री निग्रहादि महान गुण सदा वा पुरुषमो टिके हैं देहवंत न लेखिये नाम देहको धर्म आत्मामो नहीं देखत यह रीतिकरि जीवन्मुक्त होतहै तेह जीवन् मुक्त को स्वरूप अगिले तुकते जनावतहैं वेद अरु साधुके उपदेशानुसार चले ते कृतार्थ होतहैं अन्यथा नहीं यह जनाये जब संसार की आसा त्यागकरि स्थिर होय तब भगवत कृपाते सर्वकाल सुखरूप होत है स्वप्नहुमो दुखरूप जो द्वैतता ताको दर्शन नहीं होत अब कोटिन्ह बातको कहे सर्वसाधन फलसर्वसुखको अवधि यतनोईहै सो पूर्वोक्त संसारको पार तथा जीवनमुक्तन्ह की निष्ठा ब्राह्मणदेवता गुरु परमेश्वर साधुकेे भजन व्यतिरेक यह जीव तीनि काल नहीं पावतहै यह जानिकरि तुलसीदास सबनासके नाशकर्ताजो भगवान ताकों निरंतर गावत हैं यह अर्थ है ॥ १३६ ॥

मू०। जोपैकृपारघुपतिकृपालकी वैरऔरकेकहाससरै। होयनबांको बारभक्तकोजोकोउकोटिउपायकरै। तकैनीचजोमीचु साधुकी सोपांवरतेहिमीचमरै। वेदविदितप्रहलादकथासुनि कोनभक्तिपथपांउधरै। गजउधारिहरिथप्यौविभीषण भुवअविचलकबहूं नटरै। अंबरीषकीश्रापसुरतिकरि अजहुंमहामुनिग्लानिगरै। सोधोंकहाजुनकियोसुयोधन अबुधआपनेमानजरै। प्रभुप्रसाद सौभाग्यविजययश पांडवनेबरिआइबरै। जोजोकूपखनेगोपर कहंसोशठफिरितेहिकूपपरै। सपनेहुंसुख न संतद्रोहीकहंसुर तरुसोउविषफरनिफरै।हैंकाकोहै शीशईशकेजोहठिजनकीसीमचरै। तुलसिदासरघुबीरबाहुबलसदाअभयकाहूनडरै॥ १३७॥

टी०। रामजू के भक्तन्ह को प्रभाव जनावतहैं कहासरे नाम क्या

सिद्धहोय अर्थात् कछू होत नहीं बांको नाम टेढ़ो बार नास रोम सोचु नाम स्तृत्यु गरेनाम गलत भये सोधों कहा नाम सो कौन ऐसी करनी युधिष्ठिरादि के नाश निमित्त जो नहीं करत भयौ किन्तु सब उपायकियौ सुयोधननाम दुर्योधन अनुधनो अबूझ अपने अभिमानतें जरत रह्यो अर्थात् अपने क्रूर स्वभावकरि दुर्योधन युधिष्ठिरादिकों विष दियो आगमो जलायें नाना निषेध रूप उपाय जन्म पर्य्यन्त करत रह्यो पर प्रभु के प्रसन्नता तें पाण्डवन्ह को सौभाग्य अरु विजय तथा लोकविषें सुयशकरि आईवरे नाम हठात्कारकरि स्वीकार करतभये अर्थात् भगवत् अनुग्रह करि युधिष्ठिरादि कौ सौभाग्यादि आय सेवन करतभये पर कहंनाम सामान्यतें जीवमात्र के हानिको उपायकिये अरु संतद्रोही कौ तो कल्पवृक्ष विषरूप फलफले है ईशोशनाम दोसाधजाकों होय सो ईश्वर के जनको सीम नाम मर्यादा चरैनाम जलावै अर्थात् भगवत भक्तन्ह के मर्यादा को नाशकिये अपनो नाशहोतहै ईशोस कहबेको यह अभिप्राय है कि जाकोदोसाथ होय सो भगवत भक्ततें अपराधकरै काहेकि तेंहअपराधकरि एक साथ तो चक्र सुदर्शन अवश्य काटेगो दूसरो जोहोयगो तौकछु दिनतौ जीवनेकी आसहोयगी यहभाव है पूर्वोक्तरीति करि भक्तन्हके ऊपर भगवानकी ममताबिचारि तुलसिदास श्रीराम जूके भुजाबलके बलतें सर्बदा अभयरहतहैं काहूते डरै नहीं १३७॥

मू०। कबहूंसोकरसरोजरघुनायक धरिहौनाथशीससेरे। जेहकर अभयकियेजनआरतवारक बिबसनामटेरे। जेहकरकमलकठोरशंभुधनुभंजिजनकसंशयमेट्यो। जेहिकरकमलउठायबंधुज्यौं परमप्रीतिकेवटभेंट्यो। जेहिकरकमलकृपाल गीधकहंपिंडदेइ निजलोकदियौ। जेहिकरबालिबिदारिदासहित कपिकुलपति सुग्रीवकियौ। आयौशरणसभीतविभीषणजेहकारकमलतिलक कीन्हौ। जेहिकरगहिशरचाप असुरहतिअभयदानदेवन्हि दीन्हौ। शीतलसुखदछांह जेहिकरकीमेटतितापपापमाया। निशिबासरतेहिकरसरोजकीचाहततुलसिदासछाया॥१३८॥

टी०। ऊपर भुजाके बलतें अपनी निर्भयता कहे तेह हस्तकमल को स्पर्श अपने मस्तकके ऊपर याचतहैं बारक नाम एक बारबिवस नाम रोगादि ग्रस्त होयकरि जो जीव नामकों टेरै अर्थात् कहै तेहआरत जनन्ह कों जौनेहस्त कमलते अभय करतभये सो हस्त

कमलकरमेरे माथपरधरोगे हेरघुवर यह प्रार्थना है हस्त कमलकों यहसब विशेषण है शब्दार्थ स्पष्टहै जेइ हस्तकमलकी छाया शीतल करेहै सुखदनाम अविनाशी सुखदेतिहै तापनाम अध्यात्मादि पाप नाम कायिक वाचिक मानसिक माया नाम अविद्या तेहि सबको मेटति नाम दूर करतिहै अहर्निशतेहि हस्तकमल की छाया तुलसी दास चाहत है आप कृपाकरो हे स्वामिन्॥ १३८॥

मू०। दीनदयालदुरितदारिददुखदुनीदुसहतिहुंतापतईहै। देवदुआरपुकारत आरतसबकी सबसुखहानि भईहै। प्रभुकेवचन वेद बुधसम्मतममभूरतिमहिदेवमईहै। तिन्हकीमतिरिसरागमोह मदलोभलालचीलीलिलईहै। राजसमाजकुसाजकोटिकटुकल्पतकलुषकुचाल नईहै। नीतिप्रतीतिप्रीतिपरमितिपतिहेतुबाद हठिहेरिहईहै। आश्रमवर्णनधर्म बिरहितजगलोकवेदमर्यादगईहै। प्रजापतित पाखंड पापरतअपनेअपने रंगरईहै। शान्ति सत्य शुभरीतिगई घटिबढ़ी कुरीतिकपटकलईहै। सीदतसाधुसाधुताशोचतिखल बिलसत हुलसतिखलईहै। परमारथस्वारथसाधनभये अफलसकलनहिं सिद्धिसईहै। कामधेनुधरनी कलिगोमर बिवस बिकल जामति न बईहै। कलिकरनीबरनिये कहांलौं करत फिरत बिनटहलटई है। तापर दांत पीसिकरमींजत कोजाने चितकाह ठईहै। त्यौंत्यौं नीचचढ़त सिरऊपर ज्यौंज्यौंशीलवसढीलदईहै। सरुषबरजि तरजियेतरजनीकुम्हिलैहैंकौंहड़कीजईहै। दीजैदादि देखिनातौबलिमही मोदमंगल रतईहै। भरेभागअनुरागलोगकहैंरामअवधिचितवनिचितईहै। बिनतीसुनसानन्दहेरिहंसिकरुणावारिभूमिभिजईहै। रामराजभयौ काजसगुणशुभराजारामजगतविजईहै। समरथबड़ोसुजानसुसाहिबसुकृतसेनहारतजितईहै। सुजनसुभावसराहतसादर अनायाससासतिबितईहै। उथपेथपनउजारिबसावनगईबहोरि बिरदसदईहै। तुलसीप्रभुआरतिआरतिहर अभयबांहकेहिकेहिनदईहै॥ १३९॥

टी०। कलिकालकी प्रबलता देखि भगवान ते प्रार्थना करत हैं हे दीनदयाल दुरित जो पाप दरिद्र ताकों जो दुख तथा नहीं सहवे योग्य अधिदेवादि जो त्रयताप, तेहि करि दुनी नाम संसार तई है नाम तप्त ह्वैरह्यौहै हे देवआपके दरवाजेपर आरत ह्वैकरिपुकारैं

हैं काहेकि और सबके सब सुखकी हानिभईहै अर्थात् अबसबदुखी हैं तौ मैंअपनोदुखआपको छोड़िदूसरोकेहेतेंकहूंअबसबके सुखकी हानिकोंपृथक्२ देखावतहैं आपकों बेदरूप बचन अरुपण्डितन्हको सम्मतहै कि महिदेव जो ब्राह्मण सो ममभई नाम मेरी मूरति हैं अर्थात् भगवतस्वरूप हैं तिनको लालची जो मति ताकों रिसि जो क्रोध रोग जो विषैमो अनुराग तथा मोह मद लोभ जो निषेधरूप सो लोलि लईनाम आचरन करतभये यहा लालचो लोभ को बिशेषण है अर्थात् लालची जो लोभ ब्राह्मणको ऐश्वर्य हानि कहिकार अब छत्रीकोकहतहैं राजन्हकी जो समाजतेहिबिषै कुसाज कोटिन्ह कटुनाम कडुआ फल ताको अर्थात् बेद बाह्य कर्तव्यता कल्पना करत हैं तथा कलुषजो पाप तद्रूप कुचाल रोज२ नई होतहै नीति जो राजनीति प्रतीति जो बेदशास्त्र के बचनबिषैं प्रीति जो साधु ब्राह्मण परमेश्वर गुरुबिषैं परमिति नाम अपने २ बर्णाश्रमको मर्य्यादा तेहिसबको पतिनाम प्रतिष्ठा हेतु बादजो नास्तिकबाद ताने हठात्कार करिहेरिनामढूंढ़ि२ हईनाम नाश करत भयेब्राह्मणछत्री दो बर्णकी भ्रष्टताकहकरि आगेसमुदायतेजगतको दुखदेखावतहैंतहां बैश्य शूद्रादि तथा पृथक् २ आश्रमके रीतिको नहींकहे सो यहहेतु तें कि जैसे कोई राजा दूसरे देश के अमल करबे को जाय तौ प्रथम जो किला को मारलै तौ और देश सब आपै आधीन होतहै तैसे कलिकालरूप राजा जगत रूप देश के अमल करबे को आयो ताने बिचारिकरि धर्म के किलारूप जो ब्राह्मण छत्रीताको पहिलै जीति लयो तो अन्य जो बर्णाश्रमादि सो आपै बसभये यह भावहै अपने२ रंगरईहै नाम बेदशास्त्रत्यागकरि सबको मनसुखीआचरणहोतभयो शान्ति जो छमादि सो घटगई कपटरूप कलई चढ़ी है जेह कुरीति सोसो बढ़ी अर्थात् जो कोऊ कर्तव्यता भलीकरेहै सोभी कपटकरि तथा साधु सब रोदत नाम दुखपावतहैं साधुता जोधर्म सो शोचित नाम रहने नहीं पावे हैं तेहि के बिपर्यय खल सब बिलास करत हैं खल जो खलनको धर्म सो आनन्द करतहैं परमारथकेजितने साधन सो स्वारथके साधन भये अर्थात् ज्ञान भक्ति आदि जो बिद्याके अर्थ अभ्यास करेहै ताहूपर सकल निष्फलभये सिद्धिकी सईनामसमय भी नहीं है अर्थात् जीविका भी पूर्णनहीं मिले है तथा कामधेनु रूप जोपृथ्वीसो कलिकालरूप गोमरनाम कसाईके बिबसहोकरिबईनाम

बोयेतेभीनहीं जानति है अर्थात् कसाईबस पड़े गायके प्राण ऊपर आनिपर्‌यौदूध कैसेंदे तद्वत्‌पृथ्वीदुष्टजनकेबसभई कलिकालकी करनी कहांतकवर्णनकरैं बिनटहलनामबिना प्रयोजनकोटईनामटेकअर्थात् हठकरत फिरतहैं इतनी करिचुक्यो ताऊपर दांतपीसि हाथमलतहैं कोजाने कि याकेचित्तमेंकहाठईहै नाम क्याठहरीहै अर्थात् अबही पूर्णबल अपनो नहीं कियाहै यहांदांत को पीसनो यहतें बूझिपरयौ कि प्रताप रोज २ बढ़त जातहै कलिकाल की प्रभुताकहि स्वामीतें प्रार्थना करतहैं कि आपशीलबस याकोज्यौं२ढीलिदईहै अर्थात्‌याके करनी को नहीं देखते त्यौं२ यह नीच माथेकेऊपर चढ़तहै अर्थात् जगतरूप जो आपको देश तामें आपके दासन्ह को उजाड़त है औ जौ आप दोष युक्त होय बरजि करि तरजिये नाम डाटिये तौ जैसे तर्ज्जनी जो अंगुली ताके देखायेते कोंहड़े की जईनाम बतिया मुरझाति है तैसे यह कलिकाल कुम्हिलै है नाम वृद्धि न होयगो अर्थात् अपना पौरुष नहीं करिसकैगो तिन्हके दुर्दशा को देखकरि दादि नाम इनसाफ दीजे नामदेव अर्थात् करौ बलिहारी जावें हे रघुबर नातौ नाम जौ शीघ्र फिरि आदि कौन सुनेगो तौ मही जो पृथ्वी सो आनन्द मंगलतें रितई नाम खाली ह्वैगई तेहि हेतुकरि प्रजा तुम्हारे सबनष्टहोंयगे यह बिचारिकरि फिरिआदिको दादिदेवजेहितेलोग सब ऐसो कहैंकि श्रीरामजू भाग्यअरु अनुरागते पूर्णअवधिरूप जो चितवनि तेहते चितई है तथा ऐसा लोग कहैं यह प्रार्थना समाप्त पर्य्यन्त है बिनय को सुनि आनन्द पूर्वक देखि हंसिकरि करुणारूप जलतें पृथ्वीको भिजाई है अब रामराज भयौ सबके कार्य सगुण शुभ नाम मंगलरूप होत हैं राजाराम जगतके बिजई कहे जीतिबे वारे बड़े समर्थ अरु सुजान सुन्दर खाविंद पुण्य की फौज हारत रही ताको जिताय दई सज्जनलोग यह सुभाव की प्रशंसा करतहैं आदर पूर्वक परिश्रम रहित कलिकाल कृत सासति जो क्लेश ताको बितई है नाम समाप्त करि दईहै उखरे को स्थापित करनेवाले उजरे कौ बसावनेवालेगयौऐश्वर्यफेरिलेआवनेवालेऐसोबानाहैमदईनांमसदा जेहको भरेभाग यह पदते लैकरि सदई पर्यन्त जितनी उक्तिकहैं सो लोग नाम जगत कहो ऐसौ आपकरोहे भगवन् तथा तुलसी भी कहत हैं किप्रभु आरत जनके आरति जो क्लेश सो अवश्य हरत हैं अपनी कृपालुताकरि अभय रूप बांह केह कैह कौ न दई है

अर्थात् दीन ह्वैकरि शरण भये केहू कौ संसार तें निर्भय न किये यह अर्थ है॥ १३९॥

मू०। तेनरनर्करूपजीवतजग भवभंजनपदबिमुखअभागी। निशि
बासररुचिपापअशुचिमन खलमतिमलिननिगमपथत्यागी।
नहिंसतसंगभजननहिंहरिको श्रवणनरामकथाअनुरागी।
सुतबितदारभवनममतानिशि सोवतअतिनकबहुंमतिजागी।
तुलसिदासहरिनामसुधातजिशठहठिपियतविषयबिषमांगी।
सूकरश्वानशृगालसरिसजनजन्मतजगतजननिदुखलागी१४०।

टी०। भगवत बिमुख जीव नरकरूप है तथा सर्वदोष तिनमो निवास करत है यहकहि पुत्रादि बिषें जो ममता सोई रात्रिभई तेहि बिषें अति सोवत नाम गाढ़ निद्राकौ प्राप्त हैं तेहि ममता रूप रात्रितें कबहूं तिनकी मतिजगी नहीं अर्थात् कुम्भकरण भी सोवे तोकालपाय जगैयह बिसुखन्हकी निद्राआयुर्बल पर्यन्तरहति है तुलसीदास कहतहैं किभगवत्नामरूप अमृतत्यागकरि बिसुख जीवजो शठ सो हठकरि बिषयरूप बिषमांगि२ पीवत है अर्थात् बिषकरि मृत्यु होत है तथा विषय आशक्तिकरि जन्म मरण बन्यौ रहत है ऐसे जो जीव सो सूकर नाम बिष्टा तुल्य परस्त्री परद्रव्य भोग करत हैं श्वाननामस्त्रीरूप कुत्तीके पीछेलगे फिरतहैं सो बार बारकाटतिहै तबहूं बिसुखनहीं होते तइत कर्कसा स्त्री अनेक दुख देतिहै परपीछेलगे हैं शृगालनाम मृतकजीवन्हके मांसकौ भक्षण करि जन्मव्यतीत करत हैं तेहि सूकरादि सदृश जन नाम जो बिसुखजीव जगत बिषें जन्मग्रहण करत हैं सो केवल माताकेदुख देबेके निमित्त अर्थात् गर्भमो प्रवेशकरि माताको मरणान्त क्लेश देत हैं और कछू जन्मको फल न भयौ यह भाव है॥ १४०॥

मू०। रामचन्द्ररघुनायकतुमसों हैांबिनतीकेहिभांति करों। अघ
अनेकअवलोकिआपनेअनघनामअनुमानिडरों।परदुखदुखी
सुखीपरसुखतें संतशीलनहिंहृदयधरों। देखआनकीविपति
परमसुखसुनिसंपतिबिनआगिजरों। भक्तिबिरागज्ञानसाधन
कहिबहुबिधि डहकतलोकफिरैां। शिवसर्बसुखधामनाम
तवबेचिनरकप्रद उदरभरैां। जानतहूं निजपापजलधिजिय
जलसीकरसमसुनतलरैां। रजसमपरअवगुणसुमेरुकरिगुण
गिरिसमरजतें निदरैां। नानाबेषबनाइदिवसनिशिपरबित

कमलकबमेरे माथपरधरोगे हेरघुबर यह प्रार्थना है हस्त कमलकों यहसब विशेषण है शब्दार्थ स्पष्टहै जेइ हस्तकमलकी छाया शीतल करेहै सुखदनाम अविनाशी सुखदेतिहै तापनाम अध्यात्मादि पाप नाम कायिक वाचिक मानसिक माया नाम अविद्या तेहि सबको मेटति नाम दूर करतिहै अहर्निशतेहि हस्तकमल की छाया तुलसी दास चाहत है आप कृपाकरो हे स्वामिन् ॥ १३८ ॥

मू०। दीनदयालदुरितदारिद्रदुखदुनीदुसहतिहुंतापतईहै। देवदुआ-
रपुकारत आरतसबकी सबसुखहानि भईहै। प्रभुकेवचन वेद
बुधसम्मतममभूरतिमहिदेवमईहै। तिन्हकीमतिरिसरागमोह
मदलोभलालचीलीलिलईहै। राजसमाजकुसाजकोटिकटुकल्प-
तकलुषकुचाल नईहै। नीतिप्रतीतिप्रीतिपरमितिपतिहेतुबाद
हठिहेरिहईहै। आश्रमवर्णनधर्म बिरहितजगलोकवेदमर्य्याद
गईहै। प्रजापतित पाखंड पापरतअपनेअपने रंगरईहै। शान्ति
सत्य शुभरीतिगई घटिबढ़ी कुरीतिकपटकलईहै। सीदतसाधु
साधुताशोचतिखल बिलसत हुलसतिखलईहै। परमारथस्वा-
रथसाधनभये अफलसकलनहिं सिद्धिसईहै। कामधेनुधरनी
कलिगोमर बिबस विकल जामति न बईहै। कलिकरनीब-
रनिये कहांलौं करत फिरत बिनटहलटई है। तापर दांत
पीसिकरमींजत कोजाने चितकाह ठईहै। त्यौंत्यौं नीचचढ़त
सिरऊपर ज्यौंज्यौंशीलबसढीलदईहै। सरुषबरजि तरजियेतर-
जनीकुम्हिलैहैंकौहड़ कीजईहै। दीजैदादि देखिनातौबलिमही
मोदमंगल रतईहै। भरेभागअनुरागलोगकहैंरामअवधिचित-
वनिचितईहै। बिनतीसुनसानन्दहेरिहंसिकरुणावारिभूमिभि-
जईहै। रामराजभयौ काजसगुणशुभराजारामजगतबिजईहै।
समरथबड़ोसुजानसुसाहिबसुकृतसैनहारतजितईहै। सुजनसुभा-
वसराहतसादर अनायासससासतिबितईहै। उथपेथपनउजारि
बसावनगईबहोरि बिरदसदईहै। तुलसीप्रभुआरतिआरतिहर
अभयबांहकेहिकेहिनदईहै ॥ १३९ ॥

टी०। कलिकालकी प्रबलता देखि भगवान तें प्रार्थना करत हैं हे दीनदयाल दुरित जो पाप दरिद्र ताकों जो दुख तथा नहीं सहबे योग्य अधिदेवादि जो त्रयताप तेहि करि दुनी नाम संसार तई है नाम तप्त ह्वैरह्यौहै हे देवआपके दरवाजेपर आरत हाकरिपुकारैं

हैं काहेकि और सबके सब सुखकी हानिभई है अर्थात् अबसबदुखी हैं तौ मैंअपने।दुखआपको छोड़िदूसरोकेहतेंकहूंअबसबकी सुखकी हानिकों पृथक् २ देखावतहैं आपकों बेदरूप बचन अरुपण्डितन्हको सम्मतहै कि ।महिदेव जो ब्राह्मण सो ममसई नाम मेरी मूरति हैं अर्थात् भगवतस्वरूप हैं तिनकी लालची जो मति ताकों रिसि जो क्रोध रोग जो विषैसो अनुराग तथा मोह मद लोभ जो निषेधरूप सो लीलि लईनाम आवरन करतभये यहां लालची लोभ को विशेषण है अर्थात् लालची जो लोभ ब्राह्मणको ऐश्वर्य हानि कहिकार अब क्षत्रीको कहतहैं राजन्हको जो समाजतेहिविषे कुसाज कोटिन्ह कटुनाम कडुआ फल जाको अर्थात् बेद बाह्य कर्तव्यता कल्पना करत हैं तथा कलुषजो पाप तद्रूप कुचाल रोज २ नई होतहै नीति जो राजनीति प्रतीति जो वेदशास्त्र के बचनविषें प्रीति जो साधु ब्राह्मण परमेश्वर गुरुबिषें परमिति नाम अपने २ वर्णाश्रमको मर्य्यादा तेहिसबको पतिनाम प्रतिष्ठा हेतु वादजो नास्तिकवाद ताने हठात्कार करिहेरिनामढूंढ़ि२ हईनाम नाश करत भयोब्राह्मणक्षत्री दो वर्णकी भ्रष्टताकहकारि आगेसमुदायतेजगतको दुखदेखावतहैंतहां वैश्य शूद्रादि तथा पृथक् २ आश्रमकी रीतिको नहींकहे सो यहहेतु तें कि जैसे कोई राजा दूसरे देश के अमल करबे को जाय तौ प्रथम जो किला को मारले तौ और देश सब आपै आधीन होतहै तैसे कलिकालरूप राजा जगत रूप देश के अमल करबे को आयो ताने बिचारिकरि धर्म के किलारूप जो ब्राह्मण क्षत्रीताको पहिले जीति लयो तो अन्य जो वर्णाश्रमादि सो आपै बसभये यह भावहै अपने२ रंगरईहै नाम बेदाज्ञात्यागकरि सबको मनसुखीआचरणहै।तभयो शान्ति जो क्षमादि सो घटगई कपटरूप कलई चढ़ी है जेह कुरीति मोसो बढ़ी अर्थात् जो कोउ कर्तव्यता भलीकरैहै सोभी कपटकरि तथा साधु सब सीदत नाम दुखपावतहैं साधुता जो।धर्म सो शोचित नाम रहने नहीं पावे हैं तेहि के बिपर्यय खल सब बिलास करत हैं खल जो खलनको धर्म सो आनन्द करतहैं परमारथकेजितने साधन सो स्वारथके साधन भये अर्थात् ज्ञान भक्ति आदि जी विकाके अर्थ अभ्यास करैहै ताहूपर सकल निष्फलभये सिद्धिकी सईनामसमय भी नहीं है अर्थात् जीविका भी पूर्णनहीं मिले है तथा कामधेनु रूप जोपृथ्वीसो कलिकालरूप गोमरनाम कसाईके बिबसहोकरिबईनाम

बोयेतेभीनहीं जामति है अर्थात् कसाईबस पड़े गायके प्राण ऊपर आनिपरयौदूध कैसेदे तद्वत्पृथ्वीदुष्टजनकेवसभई कलिकालकी करनी कहांतकवर्णनकरैं बिनटहलनामबिना प्रयोजनकोटईनामटेकअर्थात् हठकरत फिरतहैं इतनी करिचुक्यो ताऊपर दांतपीसि हाथमलतहैं कोजाने कि याकेचित्तमेंाकहाठईहै नाम क्याठहरीहै अर्थात् अबही पूर्णबल अपनो नहीं कियोहै यहांदांत को पीसनो यहतें बूझिपरयौ कि प्रताप रोज २ बढ़त जातहै कलिकाल की प्रभुताकहि स्वामीतें प्रार्थना करतहैं कि आपशीलबस याकोज्यौं२ढीलि दईहै अर्थात्याके करनी को नहीं देखते त्यौं२ यह नीच माथेकेऊपर चढ़तहै अर्थात् जगतरूप जो आपको देश तामें आपके दासन्ह को उजाड़त है औ जौ आप रोष युक्त होय बरजि करि तरजिये नाम डाटिये तौ जैसे तर्ज्जनी जो अंगुली ताके देखायेते कोहड़े की जईनाम बतिया मुर-झाति है तैसे यह कलिकाल कुम्हिलै है नाम वृद्धि न होयगो अर्थात् अपना पौरुष नहीं करिसकैगो तिन्हके दुर्दशा कौ देखकरि दादि नाम इनसाफ दीजे नामदेव अर्थात् करौ बलिहारी जावें हे रघुबर नातौ नाम जौ शीघ्र फिरि आदि कौन सुनोगे तौ मही जो पृथ्वी सो आनन्द मंगलतें रितई नाम खाली ह्वैगई तेहि हेतुकरि प्रजा तुम्हारे सबनष्टहोयगे यह बिचारिकरि फिरिआदिको दादिदेवजेहितेलोग सब ऐसो कहैंकि श्रीरामजू भाग्यअरु अनुरागते पूर्णअवधिरूप जो चितवनि तेहते चितई है तथा ऐसा लोग कहैं यह प्रार्थना समाप्त पर्य्यन्त है बिनय को सुनि आनन्द पूर्वक देखि हंसिकरि करुणारूप जलतें पृथ्वीको भिजाई है अब रामराज भयौ सबके कार्य सगुण शुभ नाम मंगलरूप होत हैं राजाराम जगतके विजई कहे जीतिबे वारे बड़े समर्थ अरु सुजान सुन्दर खाविंद पुरुष की फौज हारत रही ताको जिताय दई सज्जनलोग यह सुभाव को प्रशंसा करतहैं आदर पूर्वक परिश्रम रहित कलिकाल कृत सासति जो क्लेश ताकौ बितई है नाम समाप्त करि दईहै उखरे को स्थापित करनेवाले उजरे कौ बसावनेवालेगयौऐश्वर्यफेरिले आवनेवालेऐसो बानाहैसदईनामसदा जेहको भरेभाग यह पदते लैकरि सदई पर्यन्त जितनी उक्तिकहें सो लोग नाम जगत कहो ऐसौ आपकरोहे भगवन् तथा तुलसी भी कहत हैं किप्रभु आरत जनके आरति जो क्लेश सो अवश्य हरत हैं अपनी कृपालुताकरि अभय रूप बांह केह केह कौ न दई है

अर्थात् दीन ह्वैकरि शरण भये केहू कौ संसार तें निर्भय न किये यह अर्थ है ॥ १३९ ॥

मू० । तेनरनर्करूपजीवतजग भवभंजनपदबिमुखअभागो । निशि
बासरुचिपापअशुचिमन खलमतिमलिननिगमपथत्यागी ।
नहिंसतसंगभजननहिंहरिको श्रवणनरामकथाअनुरागी ।
सुतबितदारभवनममतानिशि सोवतअतिनकबहुंमतिजागी ।
तुलसिदासहरिनामसुधातजिशठहठिपियतबिषयबिषमांगी ।
सूकरश्वानशृगालसरिसजन जन्मतजगतजननिदुखलागी १४० ॥

टी० । भगवत विमुख जीव नरकरूप है तथा सर्बदोष तिनसो निवास करत है यहकहे सुतादि विषे जो ममता सोई राचिभई तेहि विषे अति सोवत नाम गाढ़ निद्राको प्राप्त हैं तेहि ममता रूप रात्रितें कबहुं तिनकी मतिजगी नहीं अर्थात् कुम्भकरण भो सोवै तौकालपाय जगैयह विमुखन्हकी निद्राआयुर्बल पर्यन्तरहति है तुलसीदास कहतहैं किभगवत्नामरूप अम्रृतत्यागकरि बिमुख जीवजो शठ सो हठकरि बिषयरूप बिषमांगि २ पीवत है अर्थात् विषकरि म्रृत्यु होत है तथा विषय आशक्तिकरि जन्म मरण वन्यौ रहत है ऐसे जो जीव सो सूकर नाम बिष्टा तुल्य परस्त्री परद्रव्य भोग करत हैं श्वाननामखोरूप कुत्तीके पीछेलगे फिरतहैं सो बार बारकाटतिहै तबहुं बिमुखनहीं होते तद्वत कर्कसा स्त्री अनेक दुख देतिहै परपीछेलगे हैं शृगालनाम म्रृतकजीवन्हके मांसकौ भक्षण करि जन्मब्यतीत करत हैं तेहि सूकरादि सदृश जन नाम जो बिमुखजीव जगत विषे जन्मग्रहण करत हैं सो केवल माताकेदुख देवेके निमित्त अर्थात् गर्भमो प्रवेशकरि माताको मरणान्त क्लेश देत हैं और कछू जन्मको फल न भयौ यह भाव है ॥ १४० ॥

मू० । रामचन्द्ररघुनायकतुमसों हौंबिनतीकेहिभांति करौं । अघ
अनेकअवलोकिआपनेअनघनामअनुमानिडरौं। परदुखदुखी
सुखीपरसुखतें संतशीलनहिंहृदयधरौं । देखआनकीविपति
परमसुखसुनिसंपतिबिनआगिजरौं । भक्तिबिरागज्ञानसाधन
कहिबंहुविधि डहकतलोकफिरौं । शिवसर्बससुखधामनाम
तवबेचिनरकप्रदउदरभरौं । जानतहुंनिजपापजलधिजिय
जलसीकरसमसुनतलरौं । रजसमपरअवगुणसुमेरुकरिगुण
गिरिसमरजतें निदरौं । नानाबेषबनाइदिवसनिशिपरबित

जेहितेहियुक्तिहरौं। एकौपलनकबहुंअलोलचितहितदैपद सरोजसुमिरौं। नौआचरणबिचारहुमेरोकल्पकोटिलगिअव-टिमरौं। तुलसिदासप्रभुकृपाबिलोकनिगोपदज्यौं भवसिन्धुतरौं ॥ १४१ ॥

टी०। हे स्वामी तुमतेबिनय यह कैसेकरै काहे कि अपनोपाप देखतहै अरुआपको निष्पाप नाम है यह अनुमानकरि डरत हौं अर्थात् बिनयकरबे योग्यजो होतहै तौबिनय स्वामीसुनतहै औजो जीव योग्यनहीं सो जो बारबार कहतहै तौगरदन मोहायदेकरि निकालोजातहै यह बिचारि डरत हौं योग्यतादेखायेतेहितें अपनो बिपरीति आचरण कहतहैं छहकतनाम ठगतनाम बंचबे कों यह अभिप्राय है कि जो नाम मुक्तिफलदेत है तेहनामकौंलेतहैं यह बासनाकरिकि जगत रीझिकरि पूजादे जेहकरि पेटपालन होय उदरकौं नरकप्रदकहेमो यह हेतु कि पेटपालनके निमित्त नाना निषेध कर्म यह जनकरत है अपने पापकौं समुद्र समान जानतहूं और को पाप जलकेसीकर नामकणा समान सुनिकरि करौंनाम तैं अधमपापरूप है यह कहतहौ अन्यकोंधूली तुल्य औगुण सुमेरु समान कहत हौं अरुगुण पर्व्वत समान ताकौं धूलीसम निरादर करत हौं अलोलनाम स्थिर चित्तदेकरि हितजोचरण कमलताकौं न स्मरण किये यहां पर्य्यन्त संतन्ह तें बिपर्य्यय अपने आचरण कौं जनाये अब यह कहत हैं कि हमतो तुमतें बिनय करबे योग्यभी नहीं परिजौ मेरे आचरणकौं बिचारो तो कोटिन्ह कल्प पर्य्यन्त अवटि मरौं नाम संसाररूप कड़ाह बिषे औटाय बारबार मरूंगो औ जौ तुलसीदास को कृपादृष्टिकरि देखौ तौ गायके खुरसमान संसार समुद्रकौं पार होऊंगो यह प्रतीति है ॥ १४१ ॥

मू०। सकुचतहौंअतिरामकृपानिधिक्यौंकरिबिनयसुनावौं। सकल धर्मबिपरीतिकरत केहिभांतिनाथमनभावौं। जानतहूंहरि रूपचराचरमैंहठिनैननलावौं। अंजनकेससिखायुवतीतहं लोचनमलभपठावौं। श्रवणनिकोफलकथातुम्हारीयहसमुझौं समुझावौं। तिन्हश्रवणन्हिपरदोषनिरंतरसुनिसुनिभरिभरि तावौं। जेहिरसनागुणगाइ तिहारेबिनु प्रयाससुखपावौं। तेहिमुखपर अपबादभेक ज्यौंरटिरटि जन्मनसावौं। करहु हृदयअतिबिमल बसहिंहरिकहि२सबहिसिखावौं। हौंनिज

उरअभिमानमोहमदखल मंडलीबसावौं। जोतनुधरिहरि पदसाधहिं जनसोबिनु काजगवावौं। हाटकघटभरि धस्यो सुधागृहतजिनभकूपखनावौं। मनक्रमबचनलाइ कोन्हे अघते करियतलदुरावौं। परप्रेरितइरषाबसकबहुंक कियोकछुशुभ सोजनावौं। बिप्रद्रोहजनु बाटपस्यौहठिसबसौं बैरबढ़ावौं। ताहूपरनिजमतिबिलास सबसंतनमांभगनावों। निगमशेष शारदनिहोरिजौं अपनेदोष कहावौं। तौनसिराहिं कल्प शतलगिप्रभुकहाएक मुखगावौं। जौकरनी आपनीबिचारौं तौकिशरण हौंआवौं। म्टदुलसुभावशील रघुपतिको सोबल मनहिंदिखावौं। तुलसिदासप्रभुसों गुणनहिंजेहि सपनेहुं तुमहिंरिझावौं। नाथकृपा भवसिंधु धेनुपद समजो जानि सिरावौं॥ १४२॥

टी०। पूर्वपदबिषैं जेहकर्तव्यतातें भगवत प्रसन्नतातेहतेंअपनी करनी बिपरीत जनायेताहीको पुष्टकरतहैं समुदायतें कहिकरि अब बिशेष तें जनावत हैं चराचर जो जीव सो हरि रूप हैं एक जानत हूं हठ करि नेत्र कों नहीं लावौं नाम भगवत दृष्टि करि देखत हों अंजन केशनाम अग्नि ताको सिखा जो लहरितरूप जो खौ तेहि बिषे नेत्र रूप सलभ कौं पठावतहैं अर्थात् भगवत रूप देखेतें नेत्रकों फलहोतहै तेहितें बिपर्यय स्त्रीरूप अग्निबिषैसो नेत्र नष्टहोतहैंअर्थात्निष्फल होतहैंतावौंनाम जलावतहैंयहातावनो बंदकरबेको कहतहैं यह लोकोक्ति है अर्थात्परायेके दोषरूप वस्तु तें एहकरनको भरिभरि मूंदतहैं। तेहहेतुतें भगवत् यशको प्रवेश नहीं होतभेकज्यौंनाम मेजुकाकोनाईं अर्थात् औरपक्षी आदिके बोलबिषैं माधुर्य तथा कछुशब्द बूझिपरतहै मेजुकाको शब्दकठोर अरु अत्यन्तव्यर्थ तहत सोनाकेघड़ामो अम्टतभरि घर बिषैंधस्यौहै ताको त्यागकरि आकाशमो कूंआ खोदावतहैं अर्थात् दुर्लभ जो मनुष्य शरीरसोई सुवर्णको घटतुल्य तेहिबिषैं रुतचित आनंदरूप जोपरमेश्वरअम्टतरूप तेहिकौ त्यागकरि आकाशबिषैं कूपके खोदा- वनै तुल्य बिषय संपादनके निमित्त अनेक जल तहां आकाश तुल्य बिषय कूपसदृश जल तेहि बिषय तें जो सुख को प्रतीति सोई जल अर्थात् सबमिथ्या ऐसी मेरी मंदता जोमिथ्या को सत्यमानि अरु सत्यको त्यागकरि जन्मनाश करतहैं कायमन बचन करि प्रीति तें

जो जोनाना पाप किये ताको छपावनो परा चौर के प्रेरणाकरि अथवा ईर्षावशनाम औरकरेहै वैसोमैं हूं करूं हमतें दूसरे अधिकन कहलावैं एहरीतिकरि कबहुंक कियो जो कछु शुभ कर्म सो कहि कहि जनावत हैं। अर्थात् अपने सुख पापपुण्य कहेतें नाश होतहै सोकिंचित् जो पुण्यताको कहिनाशकिये पापकोगोप्यकरि संचित करैऐसीउलटी कर्तव्यतामेरी बांटपर्यो नाम मेरेही बखरे सोपर्योऐसज करनीकरतहैं। अरुसज्जननिमें अपने बुद्धिकेविलासकरि गिनावतहैं। एक अधमता की किठई है पूर्वोक्त बिपरीत कर्तव्यता कहिकरि अब अनन्तता जनावत हैं कै। अपनी करनी को बिचारैं तौ आपके शरणहोबेकी उतकांठा काहेको करैतेहि हेतुतें अपनी कर्तव्यता को भूलिकरि हे रघुपति तुम्हारो कोमल सुभाव अरुशीलको जोबलसो अपनेमनको देखावतहैं अपनेगुणकरि आपकेरिझाइबेकी प्रतीतिनहींकेवलस्वामीकी क्रियाकरि संसार समुद्र गायके खुर समहोतहै यह जानिकरि बिनय करतहैं कि सो कृपाकरो जेहिते यह संसार समुद्र को सिरावैं नाम समाप्त करों अर्थात् पार होऊं ॥ १४२ ॥

मू०। सुनहुराम रघुबीरगुसाईं मनअनीतिरतमेरो। चरणसरोज बिसारितिहारेनिशिदिनफिरतअनेरो। मानतनाहिंनिगम अनुशासनचासनकाहूकेरो। भूल्योशूलकर्मकेल्हुनतिलज्यौं बहुबारनिपेरो। जहंसतसंगकथामाधवकी सपनेहुं करतनफेरो। लोभमोहमदकामक्रोधरततिन्हसोंप्रेमघनेरो। परगुण सुनतदाहपरदूषणसुनतहर्षबहुतेरो। आपपापकोनगरबसावतसहिनसकतपरखेरो। साधनफलश्रुति सारनामतवभव सरिताकहंबेरो। सोपरकरकाकिनो लागशिशठबेचिहोतहठिचेरो। कबहुंकहौसंगतिसुभावतेजाउंसुमारगनेरो। तब करि क्रोधसंग कुमनोरथ देतकठिन भटभेरो। एकहौंदीन मलीनहीनमति बिपतिजालअतिघेरो। तापरसहिनजाइ करुणानिधिमनकोदुसहदरेरो। हारिपरयौंकरियतन बहुत बिधितातेकहत सबेरो। तुलसिदासयह त्रासमिटैजब हृदय करहुतुमडेरो ॥ १४३ ॥

टी०। पूर्वकही जो अपनी अधमता ताही को फेर कहत हैं अनेरोनाम व्यर्थ सोशूलनाम पीड़ाभूल्यौ जोकर्मरूप कोल्हू तासो

तिलकी नाईं बहुत बार भली प्रकार पेरेगये अर्थात् निषेध कर्म को जोफल नरकादिदु:ख सोभोगकिये खेरोनाम दोचार घरकी बस्ती अर्थात् आपतौ पाप रूप और को किंचित् पाप सुनि करि दूषणदेनो समस्त साधनको फलबेदको सारांश नदीके बेरो सदृश ऐसो तुम्हारो नाम सो परायेके हाथ काकिनीनाम कौड़ीके अर्थ में जोशठ सो बेंचिकरि उलटो हठतें ताकोदास होतहौं अर्थात् तुम्हारो नाम लैकरि विषयी जीवन्हको देखाय द्रव्यलेत हौं सोई बेंचनो भयो ऐसी अमोलवस्तु कौड़िन्हपर देकरि उलटो तेहिदेने वालेके आधीन होतहौं यह मन्दताकी अवधि है कबहुं मैं काहू के सङ्ग करि अथवा सुभावते सुमार्ग जो शुभ आचरण ताके नेरो नाम निकट भाग्यबस जातहौंतब क्रोधकरि सङ्गनाम विषयाशक्ति रूप जो कुत्सित मनोरथ सो कठिन भट मेरो नाम धक्का देत है अर्थात् सुमार्गते जुदा करतहै टरेरोनाम अतिसंघर्ष अर्थात् प्रबल होय तो धकास है मैं सब प्रकार बलहीन ताके नहीं सहबे योग्य अपनी चञ्चलताको बेग रूप जो दरेरो सो यह मनदेत है मेरे यतते कछु सिद्धिनलगो तेहितें सबेरो कहत हौं कितुलसीदास को यहचाम तब मिटै जबआप हृदय मो डेरोकरो इहां सबेरो कहबेको यह अभिप्राय है कि अबहीं शरीर विद्यमानहै अबढील किये नाश होयगो हे स्वामिन्॥ १४३॥

मू०। सोधौंको जोनामलज्जातेनहिंराख्यौरघुबीर। कारुणीकबिनु कारणहीं हरिहरो विषम भवभीर। बेदबिदित जगबिदित अजामिलबिप्रबन्धुअघधाम। घोरयमालजात निवास्यौसुत हितसुमिरतनाम।पशुपांवरअभिमानसिंधुगजग्रस्योआइजब ग्राह। सुमिरतसकृत सपदिआयेप्रभुहस्यौदुसह उरदाह। ब्याधनिषादगृद्धगणिकादिकअगणितअवगुणमूल। नामओट ते रामसबनकोदूरिकस्यौभवशूल। केहिआचरण घाटिहौं तिनतेंरघुकुलभूषणभूप। सीदततुलसिदासनिशिवासरपस्यौ भीमतमकूप॥ १४४॥

टी०। पूर्व अपनी विमुखता कही अब यहकहतहैं कि विमुख के ऊपरभी आप कृपा करतहै सोधौं को जाको अपने नाम की लज्जाकरि शरणविषे नहीं राख्यौ हे रघुबीर अर्थात् कैसहू अधम जीव नामा वलम्ब किये ताको आप कृतार्थ करत हौ काहे कि

जेहितेहियुक्तिहरों। एकौपलनकबहुंअलोलचितहितदैपद
सरोजसुमिरों। जैाआचरणबिचारहुमेरोकल्पकोटिलगिअव-
टिमरों। तुलसिदासप्रभुकृपाबिलोकनिगोपदज्यौं भवसिन्धु
तरों॥ १४१॥

टी०। हे स्वामी तुमतेबिनय यह कैसेकरै काहे कि अपनोपाप
देखतहै अरुआपको निष्पाप नाम है यह अनुमानकरि डरत हौं
अर्थात् बिनयकरबे योग्यजो होतहै तौबिनय स्वामीसुनतहै औजो
जीव योग्यनहीं सो जो बारबार कहतहै तौगरदन मोहाथदेकरि
निकालोजातहै यह बिचारि डरतहौं योग्यतादेखायेतेहितें अपनो
बिपरीति आचरण कहतहैं डहकतनाम ठगतनाम बेंचबे कों यह
अभिप्राय है कि जो नाम मुक्तिफलदेत है तेहनामकौंलेतहैं यह
बासनाकरिकि जगत रीझिकरि पूजादे जेहकरि पेटपालन होय
उदरकौं नरकप्रदकहेसो यह हेतु कि पेटपालनके निमित्त नाना
निषेध कर्म यह जनकरत है अपने पापकौं समुद्र समान जानतहूं
औार को पाप जलकेसीकर नामकणा समान सुनिकरि जरौंनाम
तैं अधमपापरूप है यह कहतहैं अन्यकोंधूली तुल्य औागुण सुमेरु
समान कहत हौं अरुगुण पर्ब्बत समान ताकौं धूलीसम निरादर
करत हैं अलोलनाम स्थिर चित्तदेकरि हितगोचरण कमलताकौं
न स्मरण किये यहां पर्य्यन्त संतन्ह तें बिपर्यय अपने आचरण कौं
जनाये अब यह कहत हैं कि हमतो तुमतें बिनय करबे योग्यभी
नहीं परिजैा मेरे आचरणकौं बिचारो तो कोटिन्ह कल्प पर्य्यन्त
अवटि मरौं नाम संसाररूप कड़ाह बिषें औटाय बारबार मरूंगा
औ जैा तुलसीदास को कृपादृष्टिकरि देखैा तैा गायके खुरसमान
संसार समुद्रकौं पार होऊंगा यह प्रतीति है॥ १४१॥

मू०। सकुचत हौंअतिरामकृपानिधिक्यौंकरिबिनयसुनावौं। सकल
धर्मबिपरीतिकरत केहिभांतिनाथमनभावौं। जानतहूंहरि
रूपचराचरमैंहठिनैननलावौं। अंजनकेसखिखायुवतीतहं
लोचनसलभपठावौं। श्रवणनिकोफलकथातुम्हारीयहसमुझों
समुझावौं। तिन्हश्रवणन्हिपरदोषनिरंतरसुनिसुनिभरिभरि
तावौं। जेहिरसनागुणगाइ तिहारेबिनु प्रयाससुखपावौं।
तेहिमुखपर अपवादभेक ज्यौंरटिरटि जन्मनसावौं। कारहू
हृदयअतिविमल बसहिंहरिकहिकहिसबहिसिखावौं। हैांनिज

उरअभिमानमोहमदखल मंडलीबसावौं। जोतनुधरिहरि
पदसाधहिं जनसोबिनु काजगवावौं। हाटकघटभरि धस्यौ
सुधागृहतजिनभकूपखनावौं। मनक्रमबचनलाइ कीन्हे अघते
करियतनदुरावौं। परप्रेरितइरषाबसकबहुंक कियौकछुशुभ
सोजनावौं। विप्रद्रोहजनु बांटपस्यौहठिसबसौं बैरबढ़ावौं।
ताहूपरनिजमतिबिलास सबसंतनमांभगनावौं। निगमशेष
शारदनिहोरिजौं अपनेदोष कहावौं। तौनसिराहिं कल्प
शतलगिप्रभुकहाएक मुखगावौं। जौकरनी आपनीबिचारौं
तौकिशरण होंआवौं। मृदुलसुभावशील रघुपतिको सोबल
मनहिंदिखावौं। तुलसिदासप्रभुसों गुणनहिंजेहि सपनेहुं
तुमहिंरिझावौं। नाथकृपा भवसिंधु धेनुपद समजो जानि
सिरावौं॥ १४२॥

टी०। पूर्वपदबिषैं जेहकर्तव्यतातें भगवत प्रसन्नतातेहतेंअपनी करनी विपरीत जनायेताहीको पुष्टकरतहैं समुदायतें कहिकरि अब विशेष तें जनावत हैं चराचर जो जीव सो हरि रूप हैं एक जानत हूं हठ करि नेच कौं नहीं लावौं नाम भगवत दृष्टि करि देखत हैं। अंजन केशनाम अग्नि ताको सिखा जो लहरितरूप जो खी तेहि विषे नेत्र रूप सलभ कौं पठावतहैं। अर्थात् भगवत रूप देखेतें नेत्रको फलहोतहै तेहितें विपर्यय स्त्रीरूप अग्निविषैसो नेत्र नष्टहोतहैंअर्थात्निष्फल होतहैंतावौंनाम लखावतहैंयहबात वनो बंदकरबेको कहतहैं यह लोकोक्ति है अर्थात्परायेके दोषरूप वस्तु तें एहकरनको भरिभरि मूंदतहैं। तेहहेतुतें भगवत् यशको प्रवेश नहीं होतभेकज्यौंनाम भेजुकाकोनाईं अर्थात् औरपक्षी आदिके बोलविषैं माधुर्य तथा कछुशब्द बूझिपरतहै भेजुकाको शब्दकठोर अरु अत्यन्तव्यर्थ तइत सोनाकेघड़ामे अमृतभरि घर विषैंधस्यौहै ताको त्यागकरि आकाशमें कूंआ खोदावतहैं। अर्थात् दुर्लभ जो मनुष्य शरीरसोई सुवर्णको घटतुल्य तेहिबिषैं सतचित आनंदरूप जोपरमेश्वरअमृतरूप तेहिकौ त्यागकरि आकाशविषैं कूपके खोदावने तुल्यं विषय संपादनके निमित्त अनेक जल तहां आकाश तुल्य विषय कूपसदृश जल तेहि विषय तें जो सुख की प्रतीति सोई जल अर्थात् सबमिथ्या। ऐसो मेरी मंदता जोमिथ्या को सत्यमानि अरु सत्यको त्यागकरि जन्मनाश करतहैं। कायमन बचन करि प्रीति तें

जो जोनाना पाप किये ताको छपावनो परा और के प्रेरणाकरि अथवा ईर्षावशनाम औरकरैहै वैसोमैं हूं करूं इमतें दूसरे अधि-कान कहलावैं एहरीतिकरि कबहूंक कियो जो कछु शुभ कर्म सो कहि कहि जनावत हैं। अर्थात् अपने सुख पापपुण्य कहेतें नाश होतहै सो किंचित् जो पुण्यताको कहिनाशकिये पापकोगोप्यकरि संचित करैऐसीउलटी कर्तव्यतामेरी बांटपर्स्यौ नाम मेरेही बखरे मोपर्स्योऐसरु करनी करतहैं। अरुसज्जननिमें अपने बुद्धिकेविला-सकरि गिनावतहैं। एक अधमता को ढिठाई है पूर्वोक्त बिपरीत कर्तव्यता कहिकरि अब अनन्तता जनावत हैं जो अपनी करनी को बिचारैं तो आपके शरणहोवेकी उतकंठा काहेको करैंतेहि हेतुतें अपनी कर्तव्यता को भूलिकरि हे रघुपति तुम्हारो कोमल सुभाव अरुशीलको जोबलसो अपनेमनको देखावतहौं अपनेगुणकरि आपकेरिझाइबेकी प्रतीतिनहींकेवलस्वामीकी क्रियाकरि संसार समुद्र गायके खुर समहोतहै यह जानिकरि विनय करतहौं कि सो कृपाकरो जेहिते यह संसार समुद्र को सिरावौं नाम समाप्त करौं अर्थात् पार होऊं ॥ १४२ ॥

मू०। सुनहुंरामरघुबीरगुसाईं मनअनीतिरतमेरो। चरणसरोज बिसारितिहारेनिशिदिनफिरतअनेरो। मानतनाहिंनिगम अनुशासनत्रासनकाहूकेरो। भूल्योशूलकर्मकोल्हुनतिलज्यौं बहुबारनिपेरो। जहंसतसंगकथामाधवकी सपनेहुं करतन-फेरो। लोभमोहमदकामक्रोधरततिन्हसोंप्रेमघनेरो। परगुण सुनतदाहपरदूषणसुनतहर्षबहुतेरो। आपपापकोनगरबसा-वतसहिनसकतपरखेरो। साधनफलश्रुति सारनामतवभव सरिताकहंबेरो। सोपरकरकाकिनी लागिशठबेचिहोतह-ठिचेरो। कबहुंकहौंसंगतिप्रभावतेजाउंसुमारगनेरो। तब करि क्रोधसंग कुमनोरथ देतकठिन भटभेरो। एकहौंदीन मलीनहीनमति बिपतिजालअतिघेरो। तापरसहिनजाइ करुणानिधिमनकोदुसहदरेरो। हारिपर्स्यौंकरियत्न बहुत बिधितातेकहत सबेरो। तुलसिदासयह त्रासमिटैजब हृदय करहुतुमडेरो ॥ १४३ ॥

टी०। पूर्वकही जो अपनी अधमता ताही को फेर कहत हैं अनेरोनाम व्यर्थ शूलनाम पीड़ाभूल्यौ जोकर्मरूप कोल्हू तामें

तिलकी नाईं बहुत बार भली प्रकार पेरेगये अर्थात् निषेध कर्म को जोफल नरकादिदुःख सोभोगकिये खेरोनाम होचार घरकी बस्ती अर्थात् आपतौ पाप रूप और को किंचित् पाप सुनि करि दूषणदेनो समस्त साधनको फलबेदको सारांश नदीके बेरो सदृश ऐसो तुम्हारो नाम सो परायेके हाथ काकिनीनाम कौडीके अर्थ में जोगठ सो बेंचिकरि उलटो हठतें ताकोदास होतहौं अर्थात् तुम्हारो नाम लैकरि विषयी जीवन्हको देखाय द्रव्यलेत हौं सोई बेंचनो भयो ऐसी असारवस्तु कौड़िन्हपर देकरि उलटो तेहिदेने वालेके आधीन होतहौं यह मन्दताकी अवधि है कबहूं मैं काहू के सङ्ग करि अथवा सुभावते सुमार्ग जो शुभ आचरण ताके नेरो नाम निकट भाग्यबस जातहौंतब क्रोधकरि सङ्गनाम विषयासक्ति रूप जो कुत्सित मनोरथ सो कठिन भट मेरो नाम धक्का देत है अर्थात् सुमार्गते जुदा करतहै दरेरोनाम अतिसंघर्ष अर्थात् प्रबल होय तो धक्कासहै मैं सब प्रकार बलहीन ताके नहीं सहबे योग्य अपनी चञ्चलताको बेग रूप जो दरेरो सो यह मनदेत है मेरे यत्नते कछु सिद्धिनलगो तेहितें सबेरो कहत हौं कि तुलसीदास को यहचाभ तब मिटै जबआप हृदय मो डेराकरो इहां सबेरो कहबेको यह अभिप्राय है कि अबहीं शरीर विद्यमानहै अबढील किये नाश होयगो हे स्वामिन् ॥ १४३ ॥

मू०। सोधौंको जोनामलज्जातेनहिंराख्यौरघुबीर। कारुणीकबिनु कारणहीं हरिहरो विषम भवभीर। बेदविदित जगंबिदित अजामिलबिप्रबन्धुअघधाम। घोरयमालजात निवास्यौसुत हितसुमिरतनाम। पशुपांवरअभिमानसिंधुगजग्रसोआइजब ग्राह। सुमिरतसकृत सपदिआयेप्रभुहरयौदुसह उरदाह। व्याधनिषादगृद्धगणिकादिकअगणितअवगुणमूल। नामओटते रामसबनकोदूरि कस्यौभवशूल। केहिआचरण घाटिहौं तिनतेंरघुकुलभूषणभूप। सीदततुलसिदासनिशिबासरपस्यौ भीमतमकूप ॥ १४४ ॥

टी०। पूर्व अपनी बिमुखता कही अब यहकहतहैं कि बिमुख के ऊपरभी आप कृपा करतहौ सोधौं को जाको अपने नाम की लज्जाकरि शरणविषें नहीं राख्यौ हे रघुवीर अर्थात् कैसहू अधम जीव नामा वलम्ब किये ताको आप कृतार्थ करत हौ काहे कि

आप कारुणीक नाम समूह करुणाके मूर्ति हो विनु करुणा नाम जोवते कछु टहल करायबे को प्रयोजन नहीं राखत केवल नाम लियेमात्रते हेहरि विषमनाम कठिनसंसारको भीरनाम बोझा अनेकन्हके हरणकिये अपनी उक्तिको अजामिलको प्रसङ्ग प्रमाण दिये सुकृत नाम एक बेर सपदि नाम शीघ्र यह दूसरो प्रमाण गजेन्द्र को टेकरि अपनी उक्ति को दृढ़किये अब समुदाय करि व्याधादि को प्रसङ्ग स्मरणकरावत हैं इतने अधमन्हको आपग्रहण किये मैं इन सबनते कौने आचरण विषे घाटि हौं अर्थात् मेरी कर्तव्यता को देखो तो तेह सबते बढ़ती ठहरैगी हे रघुबीर तब जो तुलसिदास रांचिसिवस भयानक अन्ध अंधेरे संसार रूप कूप मो पड़करि सीतनाम दुखपावत है सो केहहुतें अर्थात् जेह २ अधमन्ह को आप ग्रहण किये तेह सबतें जो हम छोटे होते तौ आप ढीलकरते तौ उचित रह्यो सो मैंतो तेहि सबन्हके मुकुट तुल्य हौं तब ढील न चहिये ॥ १४४ ॥

मू०। कृपासिन्धु जनदीनदुआरेदादिनपावतकाहे। जबजहंतुमहिं
पुकारतआरततबतिन्हकेदुखदाहे। गजप्रह्लादपांडुसुतकपि
सबकेरिपुसङ्कटमेट्यो। प्रणतबन्धु भयबिकलबिभीषणउठिसो
भरतज्यौंभेंट्यौ। मैंतुम्हरोलैनामग्रामएकउरआपनेबसावौं।
भजनबिबेकबिरागलोगभलेकर्म कर्मकरिल्यावौं। सुनिरिस
भरेकुटिलकामादिककरहिंजोरबरिआई। तिन्हहिं उजारि
नारिअरिधनपुरराखहिं रामगुसांई। समसेवा छलदान
दण्डहौंरचिउपायपचिहारयो। बिनकारणकेकलहबड़ोदुख
प्रभुसोप्रगटि पुकारयो। सुरस्वारथी अनीशअलापकानिठुर
दयाचितनाहीं। जाउंकहांकोबिपतिनिवारक भवतारक
जगमाहीं। तुलसीयदपिपोचतौतुम्हरोऔरनकाहु केरो।
दीजैभक्तिबांहबैरकज्यौंसुबसबसैअबखेरो ॥ १४५ ॥

टी०। पूर्व कह्यो जो अनेक उक्ति वाल्मीकि फेर दृढ़करत हैं हे कृपासिन्धु यहजन दीनहोकरि आपके दरबाजेपर पड़ि पुकारतहै इनसाफ क्यौंनहीं पावत चेतकहीकि राजन्हकी ड्योढ़ीपर अनेक जीव पड़े रहतहैं जाको भाग्य उदयभयो ताको कार्य सफलहोतहै सबकोनहीं तौ हे स्वामी यहरीति प्राकृत राजन्हकीहै आप की नहीं जबनाम जौने कालमें यहंनाम कोहस्थानमो आरतहोकरि

जीवतुमको पुकाख्यौ तबनाम तबहीं तेहिकेदुखको आपनाशकिये चेतपूछोकि हमकेहके दुखको छुड़ायेतौ तिनसबको नामसुनो सो नाम कहिजनावत हैं खामीकी प्रसन्नता बूझिअब अपनोमतलब कहतहैं कि मैंतुम्हारो लैनामअर्थात्तुम्हारेनामतें ग्रामनामछोटी सीचट्टी अपने हृदयरूपी पृथ्वीमो बसावतहौं तो जबकोउ नवीन ग्रामबसावे है सो प्रजा भी नवीन लैआवे है मैं भजन अरु बिवेक बिरागादि जो भले २ लोग सो क्रम २ करि नाम एक २ को लै आवत हौं बसबे के निमित्त यह नवीन जो रामपुर ताको बसते सुनि करि क्रोधते भरे भये कुटिल जो काम क्रोधादि सो अपनी बरिआईतें जोरकरतहैं तिन्हसब भलेलोगन्हको उजाड़िकरि स्त्री वासना शत्रु बुद्धि धनकामना इत्यादि जो निषेधरूप प्रजा ताको तेहि राजपुर मो राखत हैं हे रामगुसाईं चेत कहो कि उपाय कछु नहीं करते सो मैं अपनी यथाशक्ति यत्न बहुतकरत हौं सम नाम समता अर्थात् तेहिकामादि शत्रु तें प्रीतिकरि मिलापकिये जब प्रीति कियेतें नमाने तब सेवाकोनाम आधीन भये ताहू तें नमाने तब छलनाम उनकी जो रुचिभई सो देबेकोकहे परदिये नहीं जब छलकियेतें अधिकक्रोध उनको देखे तब दानदियोनाम तेह २ शत्रु को रुचि अनुसार विषयदिये याहूतेंशान्त न भये तब दण्ड दिये अर्थात् योगादि साधन तें तेहि सबको अबल करि जय करबे को चाहे हे स्वामी हम इतना उपाय रचि करि पचिमरे तब तेहि कामादितें हारि माने बिनुकारण नाम बेप्रयोजन यह रातदिनको कलह तेहिकरि बड़ोदुख भयो तब प्रभुते प्रकटकरि पुकारतहौं चेतकहो कि और देवतन्हतें फिरआदि करो तौ वेसो सब स्वारथी अर्थात् सेवा पूजाचाहतहैं सो मैं सम्पत्ति हीन कौन पूजा देऊं तथा पौरुष हीन कैसे सेवाकरूं ताहूपर अनीश नाम अन्य सब देवता असमर्थ हैं अर्थात् काम क्रोधादि के नाश करबे को समर्थ नहीं केवल अन्तर्य्यामी जो आप ताही की शक्ति है तथा अन्यदेवता सब अलायक हैं नाम हम ऐसे दीन जीवन्हके योग्यनहीं अरु निठुरनाम कठोरहैं अरुदया चित्तविषें नहीं तौ आपको छोड़ि करि कहां जाऊं तुलसी यद्यपि क्षुद्रहै पर तुम्हारो है और को नहीं यह विचारिकरि भक्तिरूप बांह साईं बैरकनाम निशान तुल्य अर्थात् नयेग्राममो निशान खड़ो होतहै, सो भक्तिरूप निशान कृपाकरि देय

जो आपके नाम के निशान खड़े भये तें सुबस नाम सुख पूर्वक खेरो नाम यह चट्टी अबबसे अर्थात् तुम्हारोनाम सुनिकरि कोऊ कामादि दुष्ट यह खेरे को उजाड़ि नसकैंगे यह प्रार्थना है ॥ १४५ ॥

मू०। हौंसबविधि रामरावरो चाहत भयोचेरो। ठौरठौर साहबी होतहै ख्यालकाल कलिकेरो। कालकर्म इन्द्री विषयगाहक गनघेरो। हैं।नकबूलत बाँधिकै मोलकरत करेरो। बन्दिछोर तेरोनामहै बिरुदैतबड़ेरो। मैंकह्योंतब छलप्रीति कै मांगेउर डेरो। नामओटअबलगि बच्योमल युगजगजेरो। अबगरीबन जमोगिये पाइबोनहेरो। जेहिकौतुकबक स्वान को प्रभुन्याव निबेरो। तेहिहेतुकर्काहिये कृपालतुलसीहै मेरो ॥ १४६ ॥

टी०। फेर अपनी गति कहतहैं कि हेरघुबर मैं सब प्रकारकरि तुम्हारो चेरो भयो चाहतहौं तहां कलिकाल को यह ख्याल है कि ठौर ठौर मो साहिबी होति है अर्थात् मैं तो आपके हाथ बिक्यो चाहत हौं तहां अनेक खरीदार अपनी साहिबी कों देखाय मोकों दासकियो चाहत हैं अब साहेबन्हको नाम कहतहैं काल जो बसंतादि यद्वा सत्ययुगादि अर्थात् जैसे काल आवत है तैसोई स्वभाव जीवको करिदेत है अरु कर्म जो शुभ अशुभ सो अवश्य अपनो फल देतहै तथा इन्द्रीगण अपने आधीन करत हैं अरु इन्द्रिन्ह को जो विषय सोऊ परबस करत है येईसब गाहक गण नाम खरीदार के समूह सो मोको घेरतहैं कहत हैं कि हमारे हाथ तू बिक सोहम नहीं कबूल करत हैं तब बाँधिकै नाम अपने बस करि मोल करत हैं करेरो नाम कड़ा इहां काल कर्मादि को जो फल सोई मोलहै सोऊ सर्वदा नहीं समय समय के ऊपर मिलैगो करेरो कहबे को यह अभिप्राय है खरीदारन्ह को हठदेखि बन्दीछोर नाम कैद को छुड़ावने वालो नामतथा बिरुदैत नाम बानाबड़ो तुम्हारो हेस्वामी तिन्ह सबन्हतें मैं कह्यौ। अर्थात् श्रीरघुबर के हाथ हम बिकबे कों जातहैं तुम सब हमैं मतिदुखदेव ऐसो बचन सुनायौं तब छलप्रीति करिनाम ऊपर तें प्रीति अंतष्करणतें छलकरि हृदयमो डेरो मांगत हैं अर्थात् न बिकोगे तौ अपने हृदय मो हम सबको रहने दो यह अभिप्रायते कि हृदयमो जो रहैंगे तौकाल पाय याको नाश करेंगे ऐसे बटपारन्हते केवल आपके,नामके ओटकरि अब तक बचि आये कलयुग जोकलियुग सो जगतविषे जेरो नाम अति जेरकियो अब

यह गरीब को नजमोगिये नाम यह सबतें जमोग न कराइये कहो को पाइबो न हेरो नाम अब जमोग कराये तें फेर ढूंढ़े हमको न पावोगे अर्थात् यह सब हमतें विरोधमाने हैंनाशकरि डारेंगे चेत कहोकितू कौन बड़ो अधिकारीहै कि तोकौं मैंग्रहण करूंतौ सुनो जेहलीलाकरि बक अरु श्वानकौ हे प्रभु आपन्याय नाम इनसाफ निबेरो नामनिर्णयकिये अर्थात् बगला अरु उलूककौ विवाद भयौ तेहि को इनसाफ करि उलूक कौ झूठो मानि बगुला कौ जयपत्र दिये अरु वाको घरअमल कराये तथा श्वान कौ कोऊ संन्यासीने बे-कसूरलाठी मार्यौ तेहकौ हाथीपर चढ़ाय अयोध्यातें बाहर कियो यह इतिहास विस्तार करि बाल्मीक रामायण के उत्तरकांड में है कृपालुतेहि कौतुकनाम तैसेई लीलापूर्वककहिये कि तुलसीमेरो है अर्थात् कामकर्मादि जो मोकौ घेरिकरि दास कियौ चाहत हैं तेहिसबतें आज्ञाकरि देव कियहमेरो गुलामहै तुम सब वाकेनिकट मतिजावो यह विनय है ॥ १४६ ॥

मू०। कृपासिंधुतातेरहौंनिशिदिन मनमारे। महाराजलाजआपु-
हिनिजजांघउघारे। मिल्योरहैं मार्यौ चहैं कामादिसंघाती।
मोबिनरहैंनजेरियेजारैंछलछाती। बसतहियेहितजानिमैं सब
कीरुचिपाली। कियौकथिककोदण्डहैंजड़कर्मकुचाली। देखी
सुनीनआजलौंअपनायतिऐसी। करहिंसबैसिरमेरही फिरिपरै
अनैसी। बड़ेअलेखीलखिपरैपरिहरैनजाहीं। असमंजसमैंमगन
हौंलीजैगहिबाहीं। बारकबलि अवलोकियेकौतुकजनजीको
अनायासमिटिजायगोसंकटतुलसीको ॥ १४७ ॥

टी०। हे कृपासिंधु तेहि हेतुतें मनमारे रहतहौं कि अपनी जांघ उघारे तें अपने को लाजहै हे महाराज अर्थात् और कोकियो दुख कह्यौ जातहै अरु अपनी करतव्यतातें अपनो क्षोभता को कहाकहैं पूर्वतुकमो अपनीगति अनिर्वचनीय कहेसो देखावतहैं कामक्रोधा-दि जो संगी सोहमतें मिले रहतहैं अरुमार्यौ चाहत हैं चेतकहो कि ऐसे को छोड़ि क्यौं नहीं देते सोहम व्यतिरेक कामादि एकऊ पलरहते नहीं जहां जांय तहां विद्यमान हैं संगी तो ऐसे पर छल करि मेरीही छाती जारतहैं सर्वदा हृदयमो बसत हैं यहहेतु हित जानकरि मैंने सबकी रुचि पालनकरि अर्थात् तेहितेहि कौ विषय दिये परि यह जड़ कुचाली जोकर्म सोमोकों कथिककी दण्ड कियो

नामनाचनेवाले जोकथकसो अपनेलड़केकोंलाठीमो घुंघुरूबांधिनाच सिखावत हैं सो लाठी अतिचंचल होतिहै अरु पथिक को दण्ड जो पाठ होय तौ रास्तागीर की लाठी सोऊ चचल होति है अभिप्राय दोऊ अर्थ को चंचल तामो है अर्थात् कर्मादि मोको नाना विषय चंचलकिये हैं हेस्वामी ऐसी अपनायति आजुदेखी सुनी नहीं कि अनैसीनाम निषेध व्यापारकरें तो सब परताको फलभोग फिरनाम घूमि घुमाय मेरे सिरपरैहै अर्थात् कर्तव्यता शरीर इन्द्रीआदि सब को भोग जीवकरैहै प्रथम तो यह काम क्रोधादि बड़े अलेखीनाम लखे नहींजाते चेतलखि परे नाम चीन्हेगये तौछोड़े नहींजाते यह असमंजसमो मैं डूब्यौहूं आपकृपाकरि बांहपकड़िलेव तो बचतहैं। चेत कहो कि तू कौनबड़ो आदमीहै जो मैंबांहपकडूं तो यहबात सत्यहै बलिहारीजावैं एकबार यहजनके जीको कौतुक जो पूर्वकहि आये सोआंखन्हके कोरतें देखो देखने मात्रकरि अनायासतुलसी को सब संकट मिटि जायगो अर्थात् देखबेमो कछु परिश्रम है नहीं अब कृपा करो हे श्री रघुबर॥ १४७॥

मू०। कहैांकौनमुहलाइकैरघुबीर गुसाईं। सकुचत समुझत आपनी सबसाईंदुहाई। सेवत बससुमिरतसखा शरणागतसोहैां। गुणगनसीतानाथकेचितकरतनहैांहैां। कृपासिंधुबंधु दीनके आरतहितकारी। प्रणतपालबिरुदावलीसुनिजानि बिसारी। सेइनधेइनसुमिरकै पदप्रीति सुधारी। पाइसुसाहिब राम सोभरिपेट बिगारी। नाथगरीबनिवाजहैं मैंगहिनगरीबी। तुलसीप्रभुनिज ओरतेबनिपरैसोकीबी॥ १४८॥

टी०। हे रघुबीर गुसाईं कौन मुंहलायकरि आपतें कहूं अपनी सब स्वामी द्रोहता समुझत सकुचत हैं। अर्थात् आप को अनन्त उपकार औार अपनी बिमुखता रूप द्रोह स्मरण करि मुंह सन्मुख नहीं कियोजाय है अपनो दोष कहिकरि स्वामी के गुण कहत हैं सेवनकियेतें बस होतहौ स्मरणकिये मित्र अर्थात् सर्वकाल प्रत्यक्षहौ पर शरण प्राप्तभये सन्मुखहोत हौ ऐसे जो आप श्री जानकी पति ताके गुण समूहकौ चितविषें न करत हैं। कृपालुतादि बिरदावली आपकी सुनिजानि करिभी बिसारत भये सेवनकरि ध्यान करिस्मरणकरि आपके चरण कमलविषें प्रीति न सुधारी नाम भली प्रकार धारण न करी श्रीरामजू ऐसो सुन्दर खाविन्द पायकरि भी भरिपेट

बिगारी नाम बिमुखन्हके आचरण कौ करते जन्मखोयौं आप गरीब नेवाजहौ यामें संदेहनहीं पर और कर्तव्यता कहाकरूंगो गरीबौ भो न ग्रहणकिये ऐसा अधम तुलसी है हे प्रभु हे नाथ अब अपनी ओरते जो कुछ बनि आवै सोकरा ॥ १४८ ॥

मू०। कहांजाउंकासोंकहोंऔरठौरनमेरे। जन्मगवांयोतेरेहीद्वार किंकरतेरे। मैंतोबिगारीनाथसौं आरतिकेलीन्हे। तोहिंकृपा निधिक्यौं बनेमेरीसीकीन्हे। दिनदुर्दिनदिनदुरदशा दिनदुख दिनदूषण। जबलौंतूनबिलोकिहै रघुवंशबिभूषण। दईपीठि बिनडीठमैंतुमबिश्व बिलोचन। तोसोतुहीन दूसरोनत सोचबि-मोचन। पराधीनदेव दीनहौंस्वाधीन गोसाईं। बोलनिहारे सौंकरेबलिबिनयकिझाईं। आपुदेखिमोहिं देखिये जनमानि-यसांचो। बड़ीवोटरामनामकोजेहिंलयोसोबांचो। रहनिरीति रामरावरी नितहिय हुलसी है। ज्योंभावै त्यौंकर कृपातेरो तुलसी है ॥ १४९ ॥

टी०। अब यह कहत हैं की जौ आप कृपा करो तो आप की बड़ाई है चेत मेरे बिनय कौनसुनों तबहूं मैं कहांजाऊं अपनीबि-पत्ति केहते कहें और ठौर तो मोकों है नहीं तथा यह जन्म तुम्हारे दरवाजे पर ब्यतीतकियौ आपके दास होकरि अर्थात् यह जन्म तो आप के दरवांजेपर गयो अबतो फेर जब दूसरो जन्महोय तब कोऊ दूसरे की सेवाकरें यह भाव है चेत आपकहो कि तू अपनी बिमु-खता आपै कहे है तौ मैं क्या करूं सो हे स्वामी मैंने जो आप सों बिगारी सो आरतिके लीन्हे नाम क्लेश ग्रस्तकौ विचार नहीं रहत और आप जो स्वतंत्र सर्वेश्वरताको मेरीसी कीन्हे क्यौं बने हे कृपा निध अर्थात् हमारी करनी अनुहारि आपकौं करनो न चाहिये दिन नाम प्रतिदिन दुर्दिन नाम दुख के दिन होंयगे अरु दिन नाम रोजरोज दुर्दशा होयगी तथाप्रतिदिनदुख भोगकरेंगे अरु दिनदिन जगतबिषें दूषण होयगो जौलौं तुमनहीं कृपा कटाक्ष ते देखोगे हे रघुवंश बिभूषण चेतकहो कि तैं देखत नहीं हमहीं कों देखावै है सो मैंने पीठि दई तो मोको उचित है काहे कि बिनडीठ नाम अन्धे हैं और आप तो बिश्व बिलोचन नाम समस्त ब्रह्मांड के नेत्र आपै की आंख है तो आपको न देखनो कैसे उचित होय तुम ऐसेतुमहीं हौ दूसरो नहीं नतजो प्रणाम करत जीव ताके शोच छोड़ावनेवाले

मैं तो पराधीन अरु दीन नाम पौरुषहीन और स्वामी स्वाधीननाम स्वतंत्र गोसाईं नाम इन्द्रिन्हके स्वामी अर्थात् प्रेरकसो इहां ठकुराई छोड़ि इनसाफ करा कि वालनि हारे सो नाम चैतन्यतें झाईं जो परछाहीं सो बिनयकरि सकै है वलिजांव हे रघुवर यहगूढ़ अभिप्राय है चितदै करि सुनो अर्थात् मनुष्य की परछाहीं जड़मे। क्याकरिसकै है तैसें यह जीव भगवान का प्रतिबिंब है तो प्रतिबिंब का धर्म है कि बिंब जो आधार सोजैसा आचरण करतहै तैसा प्रतिबिंब विषैं प्रतीति होतहै अर्थात् स्वरूप खड़ो होतहै तो परछाहीं भी खड़ी होतहै बैठे ते बैठि जातिहै जोजो चेष्टा स्वरूप करे सो सो याहूमो भाषतहैतैसे आपनो जो भाव करतहो सोयाकी कर्तव्यता होतिहै तब यहतें सेवा चाहो अरु याके करनीको देखोतौ आप ईश्वरहो तुमको को कहेयह भाव है पूर्वकेरहस्यको विचारि अपनी ओर देखितब मेरीओर देखो अर्थात् कठपुतरी समान नचावतहो ऐसाबूझि अपनो सांचो जन यह कौ मानो अबफेर फारकिये नहीं बनैहै तथा रामनामकी बड़ीओट है जानेतेहि ओटको लियोसो संसार रूपव्याघ्रतें बचो ऐसावेद शास्त्र सज्जन पुकारि रहे हैं तो सब बचैं एक मैं मारयौ जाऊं यह उचित नहींहै आपकी रीति रहनि हे रामजू नितनाम रोजरोज मेरे हृदय मो झलमत है तेहितें तुलसी तुम्हारो गुलाम है जैसे भावै तैसें कृपा करो स्वतंत्र हो १४९ ॥

मू०। रामभद्रमोहिआपनो सोचहै अरुनाहीं। जीवसकलसंतापके
भाजनजगमाहीं। नातोबड़ोसमर्थसो एकवोरकिधोंहूं। तो
कौमोसेअतिघने मोकोएकतोहूं। बड़गलानिहानिहैहियेसर-
वज्ञसुमाईं। कूरकुसेवक कहतहैा सेवककीनाईं। भलौपोच
राम को कहै मोहिं सब नरनारी। बिगरे सेवक स्वान ज्यौं
साहिबसिरगारी। असमंजसमनकोमिटैसोउपाउनसूझै। दीन
बंधुकीजैसोईबनिपरै जोबूझै। बिरदावलीबिलोकियेतिन्हमें
कोइहैांहैां। तुलसीप्रभुको परिहरयौं शरणागतसोंहैां॥ १५०॥

टी। हे राम भद्र नाम कल्याणमूर्ति अपनो शोच मोको है अरु नहीं भी है काहे कि जीवसकल संतापके पात्र है जगत मो अर्थात् जबहीं जीवनाम कहायो तबहीं कलेशको पात्रभयौ तौ जब अवश्य भोगकरनो तबकौन शोचकरैं तथासंसार प्रवाहके वेगतें जब अति व्याकुलता होतहै तब शोचआवैहै यहभावहै बड़ेसमर्थसो नातो

एकओर किधौंहूंनाम एकमेरीये ओरतें हैं काहे कि तुमको हमऐसे घनेरेहैं अरुमोको तुमएकहो अर्थात् तुमसेवक न भी मानोतौहूं मैं कैसे स्वामीनमानूं बड़ीगलानि ह्वान हृदयमोहै यहहेतु कि स्वामी मेरो सर्वज्ञ मैं कूरकुसेवकनाम निमकहराम ऐसोहौं पर बातबनाइ कहतहौं भलेसेवक के तुल्य अर्थात् हृदयमेरो कुटिलबचनसूधौतो अत्यन्त स्वामीके निकटपरदा पड़ैहै सर्वज्ञतें कैसें छिपैगो यह समुझतहौं तबगलानि होतिहै भलाहै अथवा क्षुद्रहै पर सोको कबहौ पुरुष जगत बिषें रामको कहत हैं तो यह बात लोकमें प्रसिद्ध है कि सेवकके बिगरेखाबिन्दके माथेपर गाली होतिहै स्वान ज्यौंनाम कूकर ढंढ़ाई करतहै गाली वाको स्वामी पावतहै ऐसाबूझि अपनी सेवकाई योग्यमोको करो यहभाव है मैं अपनी कला बहुत प्रकार की करतहौं परमनको असमंजस नहीं मिटैहै अरुताके मिटायबेको आपकी कृपाको छोड़िदूसरो उपाय नहीं सुझैहै अब हे दीनबन्धु मेरी बिनय को बूझिकर जो बनिपड़े सो करो चेत करो कि कौने सम्बन्धते तोको ग्रहणकरें तो अपनो जितनी बिरदावली पतितपावनादि ताको अवलोकनकरो तिन्हमेंनाम अधमादि जो कोई एकहम हूं होंगे अर्थात् अधमाई पतिताई आदि लेकरि सब हममो हैं पर आपको देखेते एकतो कोउठहरैगो चेत एकऊ नहोय प्रभु जो आप सो त्यागकरों तौतुलसी आपकेशरण प्राप्तहोकरि सोहैं नामसन्मुख रहैगो आपको छोड़ि अन्यत्र जानेवालो नहीं है ॥ १५० ॥

मू०। ज्यौंपैचेराईरामकीकरतेनलाजो। तौतूदामकुदाम ज्यौंकरकरनबिकाजो। जपतजीहरघुनाथकोनामनहिंअलसातो। बाजीगरकेसूमज्यौंखलखेहन खातो। जौतू मनमेरे कहे राम काम कमातो। सीतापतिसन्मुखसुखी सबठांव समातो। रामसुहाते तोहिजौतूसबहि सुहातो। कालकर्म कुलिकारनीकोऊ नकुहातो। रामनामअनुरागहीजियजोरतिआतो। स्वारथपरमारथपथीतोहिसबपतिआतो। सेइ साधु सुनिसमुझि के परपीरपिरातो। जन्मकोटिकोकांदलोहृदहृदयथिरातो। भवमगअगम अनन्तहै बिनुश्रमहिंसिरातो। महिमाउलटेनामकीमुनि कियेकिरातो। अमरअगमतनपाइसोजड़जायनजातो। होते मंगल मूलतूअनकूलबिधातो। जौमन प्रीतिप्रतीतिसों राम नामहिं रातो। तुलसीरामप्रसादसौंतिहुंतापनतातो ॥ १५१ ॥

टी०। जौपै रेजीव रामजू की गुलामी करते लज्जा न करतो तौ तू रामनाम शुद्ध सुवर्ण होकरि कुदाम ज्यौं नामरांगा शीशा की तरह हाथतें हाथ न बिकतो अर्थात् जहां तहां निरादर न होते। रामजी के नामको जपते जिह्वातें जो तू आलस न करतो तो बाजीगर नाम नट ताके सूम ज्यौं नाम कपड़ा के स्वरूप बनाय वाको सूम कहत हैं तेहिके सदृश रेखल तू खेहनाम धूरि नखातो अर्थात् तमासा के अन्तमो नट वाके मुखमो धूरि देत है तैसे तू जहां तहां धूरि फांकत न फिरतो जो रे मन तू मेरे कहेतें राम का नाम कमाते नाम श्रीरघुबर परिचर्या करतो तौ श्रीसीता-पतिके सन्मुख भयेतें सुखी होकरि सबठांवनाम लोकपरलोक दोऊ मो समातो नाम प्रवेश होतो रामजू ताको प्रिय लगते तौतू सब कोप्रियहोतो कालकर्मकुलिनाम सबकारनी जोकारण करनेवाले हैं। तोउनकोहातो नामक्रोध न करतो रामनामके अनुराग करि जोतेरे जियमो प्रीतिआवती तोस्वारथकेपथी जोयह लोकसम्बन्धी तथापरमारथ पथीनाम परलोकके सङ्गी तोको सब पतियातोनाम प्रतीतिकरतोअर्थात् स्वारथपरमारथ दोऊको सुखतथा अभिलाष मिलत साधुको सेवनकरि सुनि समुझिके परायेके पीरतें आपपीर मानतो तो कोटिन्हजन्मको कांद्रैलोनाम मलीनता हृदयरूपहृदसो थिरातोनाम थिरहोतो अर्थात् हृदयशुद्ध होत संसारमार्ग कठिन अनन्तहै परव्यतिरेक परिश्रम सिरातो नाम समाप्त होतो काहे कि उलटे नामको यह महिमा है कि किरातरूप जीवहिंसकजो बालमीक सोमुनिभये देवन्हको दुर्लभजोशरीरसो पायकरि रेजड़ जायनाम व्यर्थ जो नजातो तौ समस्त मङ्गलकोमूल तूहोतो तथा ब्रह्मासानुकूल होते जौरेमन प्रीतिप्रतीतिसौं रामनाम विषेरति करतो तौ तुलसी कहतहै कि रामप्रसाद सों त्रैताप करि ताते नाम तप्त नहीं होतो ॥ १५१ ॥

मू०। रामभलाईआपनीभलकियौंनकाको। युगयुगजनकीनाथको जगजागतसाको। ब्रह्मादिकबिनतीकरीकहिदुखबसुधाको। रविकुलकैरवचंदभोआनंदसुधाको।कौशिकगरततुसारज्यौंत-कितेजतियाको।प्रभुअनहितहितकोदियौफलकोपकृपाको। हरयोपापआपजाइकैसंतापशिलाको।सोचमगनकाढ्यौसही साहिबमिथिलाको। रोष रासिभृगुपतिधनीअहमितिमम-

ताको। चितवत भाजन करिलियो उपसम समता को। मुदित मानि आयसु चले बन मातु पिताको। धर्मधुरन्धर धीर सो गुणशील जिताको। गुह गरीब गतज्ञाति हूं जो वजेहि नभखाको। पायो पावन प्रेमतें सनमान सखाको। सद्गति सवरी गिद्धकी सादर करताको। शोचसीव सुग्रीव के संकट हरताको। राखि बिभीषणकों सकैतेहि कालकहांको। आजविराज राजहै दशकंठ जहांको। बालिसबासीअवधके बूझियेनखाको। तेपांवर पहुंचे तहां जहं मुनिमनथाको। गतिनलहै रामनामसो विधिसोसिरजाको। सुमिरत कहत प्रचारिकै बल्लभ गिरिजाको। अकनिअजामिलकी कथा सानन्दनभाको। नामलेत कलिकालहूं हरिपुरहिंनगाको। रामनाममहिमाकरैकामभूरुहआको। साखी वेदपुराणहैतुलसीतनताको॥ १५२॥

टी०। श्रीरामजू अपनी ओर देखि सबको भलो करत हैं यह बात जनावत हैं सूर्य कुल कुईं रूप ताको चन्द्रमा सदृश आनन्द रूप अमृतते पूर्ण अर्थात् अवतार ग्रहणकरि ब्रह्मादिकों दुखछोड़ायो विश्वामित्र तुषार नाम पालाकी नाईं गलतरहे ताड़का के तेजकों देखिकरि प्रभु जो श्रीरघुबर सो तिनकों सुखी किये तथा अनहित जो ताड़का ताकों हितकी नाईं कोपकरि कृपाको फल दिये अहिल्या को जनकजू को दुख निवृत्ति किये क्रोध के राशि अहंकार ममता के धनी जो परशुरामजू ताको कृपादृष्टितें देखि करि उपसम नाम वैराग्य अरु समता को पात्रकरि दियो पिता माताके आज्ञाकरि आनन्दचित्ततें अयोध्या ऐसी राजधानी त्याग करि बनको चले यह हेतुतें धर्म के बोझा को धारण करता अरु धीर गुणशीलके जीतनेवाले रघुबरको त्यागकरि दूसरो को अर्थात् कोऊ नहीं गुह जो निषाद गरीब गत ज्ञातिहूं नाम नीच जाति तथा कौन ऐसो जीव है जेहि को नभखा नाम नखायो अर्थात् हिंसारूप जीविका जाकीसो मित्रको सतकारपायो केवल पवित्र प्रेमतें वृद्ध सवरी कों पिता माता मानि सद्गति दिये शोच को सीवा जो सुग्रीवता को संकट दूरिकिये ऐसो दूसरो को बिभीषण कों देखावतहैं कहां नाम केहस्थान मो दूसरो को तेहिकाल विषय जो राखिसकै बालिस नाममूर्ख अवधको बासी जो रजक श्री जनक नन्दिनी को निन्दाकियो बूझिये नाम बूझेतें न खाको नाम

बामोखा कभी नहीं अर्थात् अति मति मन्द तोकौं दुर्लभ गति दिये रामनामते जेहि जीवकों गतिनहीं सो जीव ब्रह्मा उत्पन्न न कियो यह विचारि आपको स्मरण करतहैं तथा प्रचारिकै कहत हैं शिवजू अकनि नाम जानिकरि नभाको नाम आनन्द युक्त को न भयो नगाको नाम को न गयो रामनाम की ऐसी महिमा है को आको नाम एक वनकौं कल्प वृक्ष करे अर्थात् अति नीच को अति उत्तमकरेहै याको साची बेदपुराणहै तथा प्रत्यक्ष यह काल सो तुलसी के शरीर को देखो ॥ १५२ ॥

मू० । मेरे रावरियैगति है रघुपतिबलिजाउं । निलज नीच निर्धन निर्गुणकहंजगदूसरोनठाकुरठाउं । हैंनरघरभवभरे सुसाहिबसूझतसबनिआपनोदाउं । बानरबन्धु बिभीषणहितबिन कौशलपालकहुंनसमाउं । प्रणतारति भञ्जनजनरञ्जन शरणागतपविपञ्जरनाउं । कीजैदासदासतुलसी अब कृपासिन्धु बिनमोलबिकाउं ॥ १५३ ॥

टी० । स्वामीतें कहतहैंकि सर्वदोषयुक्त जो मैं ताको आपछोड़ि दूसरीगति नहीं और जो ऐश्वर्यवान साहिबो घरघरभरेहैं पर सबको अपनोदांव सूझत है जो सेवा पूजाकरबेकौं समर्थ ताही पर अनुग्रह करतहैं बानरकोबंधु तथा बिभीषणजो निशिचरताकोहित नामभित्रकरनोकोशलपालजोआपतेहिबिनअहकर्तव्यताकी समाउ अन्यत्र नहीं शरणागत जीवन्ह के रक्षाकरबे को पवि पंजर नाम वज्रकेपिंजरातुल्य नामजाको ऐसोजो आपहैरघुबीरसो अबतुलसी दासकौंअपनो दासकरो चेतकहैाकि निकम्मोकौं हममोल लैकरि कहाकरें सो हे कृपासिंधु यह बिनामोल बिकेहै अर्थात् आपको कछु देनोनहीं होयगो मेंतिको गुलाम होतहैं ॥ १५३ ॥

मू० । देवदूसरोकौनदीनकोदयाल । शीलनिधान सुजानशिरोमणिशरणागति प्रिय प्रणतपाल । कोसमर्थ सरवज्ञसकलप्रभु शिवसनेहमानस मराल । कोसाहिब कियेमीतप्रीतिबसखग निशिचरकपि भीलभाल । नाथहाथ मायाप्रपंचसबजीवदोष गुनकर्मकाल । तुलसिदासभलोपोचरावरोनेकुनिरखिकीजै निहाल ॥ १५४ ॥

टी० । स्वामीको गुणकहतहैं यहतुकमो ऐश्वर्यकहिकरिमोको कृतार्थकरो यह विनय करत हैं शिवजू को स्नेहसोइ मानसरावरे

तेहिविषैं विहार करिबेकों हंसरूप अन्यत स्पष्ट है ॥ १५४ ॥

मू० । बिश्वासएकरामनामको । मानतनहींप्रतीतिअनतऐसोई
सुभावमनबामको । पढ़िबोपर्योनछठीछमतऋगयजुरअथ-
र्बनसामको । ब्रततीरथतपसुनिसहमतपचिमरैकरैतनछाम
को । कर्मजालकलिकालकठिन आधीनसुसाधितदामको ।
ज्ञानविरागयोगजपतपभयलोभमोहकोहकामको । सबदिन
सबलायकभवगायकरघुनायकगुणग्रामको । बैठेनामकाम
तरुतरडरकौनघोरघन घामको । कोजानैकोजैहै यमपुरको
सुरपुरपरधामको । तुलसिहिबहुत भलोलागतजग जीवन
रामगुलामको ॥ १५५ ॥

टी० । रामनामको त्यागकरिअन्यप्रतीति नहीं मानतऐसेई
सुभाव यह मेरे टेढ़े मनको है यहां अनेक साधन शास्त्र प्रतिपा-
दनकरै है तिन्हके नहीं मानवे के हेतुते टेढ़ो कहे छमतजो छवो
शास्त्रकोमततथा चारोंवेदताकोपढ़िबो मेरेछठीमेनपर्योअर्थात्
हमारे भाग्यमेब्रह्मा लिखिनहीं अरुव्रततीरथके क्लेशको सुनिकरि
मन सहमत है कि शरीरको छाम नाम दुर्बलकरि को पचिमरै
यज्ञादिजो कर्मकोसमूहसो कलिकालमे कठिनहै काहेकिसुसा-
धितदाम नामबड़े परिश्रमतें संपादन कियौ जो बड़ो ऐश्वर्यताके
आधीनहै अरुज्ञानादिजो साधनताको लोभादिको भयलग्योहैसब
दिनमे सबकेलायकतो केवल श्रीरघुवरको गुनसमूहहै जाकोभव
गायकनाम शिवजूगावतहैं तथारामनाम जो कल्पवृक्षताके नीचे
बैठेतें घोर जो कठिन घन नाम निबिड़ जो घामताको कौनडर
अर्थात् सम्पन्नवृक्षकेनीचेवासकोभयनहींहोततौकल्पवृक्षकी छाया
मे बासको कौनडर तैसे नामावलंबीको संसार कृतदुखकहां है
पूर्वोक्तहेतुन्हकरि अन्यसब साधनको आस त्यागकरि ऐसो विचार
करनो चाहिये यमपुरको नजायगो तथादेवलोक केहको मिलेगो
अरुपरधाम नाममोक्षको पावेगो वहकोजानेहै अर्थात्कोई फिरि
आइकरि कह्यौनहीं जेहिते प्रतीति होय कि यहकर्मतें यहगति
को प्राप्तभईऐसाबूझि तुलसीको यहबहुत भलोलागत है कि राम
गुलाम होकरि जगतविषै जीवन व्यतीत करनो अर्थात् नरकको
भय स्वर्ग मोक्षकी कामना त्याग करि रामगुलाम ह्वै रहनो यह
मनुष्य जन्म ग्रहणको फल है ॥ १५५ ॥

मू० । कलिनामकामतरुरामको । दलनिहारदारिदुकालदुख दोषघोरघनघामको । नामलेतदाहिनोहोतमनबामबिधाताबामको । कहतमुनीशमहेशमहातमउलटेसूधेनामको । भलोलोकपरलोकतासुजाके बललललितललामको । तुलसी जगजानियतनामतेंसोचनकूचमुकामको ॥ १५६ ॥

टी० । नामको प्रभावकहतहैं नामरूपकल्पवृक्ष दारिददुकाल नाम आपतकाल अरु दुखदोष सोई कठिन घनघामभयो ताको नाशकनामकेलेते वाको नामभाग्यहीनको विधाता जो ब्रह्माताको टेढ़ोजोमनसो दाहिनोनाम सन्मुखहोतहै अर्थात् जाकोभाग्य को लेसऊ नहीं ताहू को नामावलंब करि ब्रह्मा प्रसन्न होय फिर भाग्यवान करतहैंसो यहनामको महिमामैं नहीं करतहौंसोनहीं किंतु उलटेनाम को मुनीशजो बाल्मीक तथा सूधेनामको शिवजू कहतहैं ताकोलोक परलोक दोऊमों भलोहै ललितललाम नाम सुन्दरौं तें सुन्दर अर्थात् ज्ञानादि जो उत्तम साधन ताहू को भूषण रूप जो रामनाम ताकोहै बल याको तासो अपनो प्रमाण देत हैं कि नामके शरणतें याको कूच मोकामको सोच नहींयह लोकोक्ति है अर्थात् अत्यन्त बेखबर मंद बुद्धि इहां तक कि कूच मोकाम नाम जन्ममरण ताको खबरनहीं ऐसो जो तुलसी ताहू को जगत जानत भयो ॥ १५६ ॥

मू० । सेइये सुसाहिबरामसो । सुखदसुशील सुजानसूर सुचिसुन्दर कोटिककामसो । शारदशेषसाधुमहिमाकहैंगुणगणगायक सामसो । सुमिरिसप्रेमनामयासोंरतिचाहतचन्द्रललामसो । गमनबिदेश नलेशकलेशको सकुचतसुकृत प्रणामसो । साखी ताकोबिदितबिभीषणबैठोहैअबिचलधामसो । टहलसहजजन महलेमहल जागत चारोयुग यामसो । देखत दोषनखीझत रीझतसुनिसेवकगुणग्रामसो । जाकोभयेति लोकतिलकभये त्रिजग योनितनतामसो । तुलसीऐसे प्रभुहिभजै जोनताहि बिधाताबामसो ॥ १५७ ॥

टी० । रामजूको सेवन करनो यह सर्व सम्मत है जेहि रघुवर के महिमाको शारदादि सबकहै हैं तथा सामवेद जाके गुणको गायक है अरु प्रीति पूर्वक नाम स्मरणकरि जासोनाम जेहि रामजूतें प्रीति चाहत हैं चन्द्र ललाम सो नाम शिवजू ऐसो ईश्वर तेहि

स्वामी के सेवाको सुलभता देखावत हैं कि विदेश को गमनशरीरादि क्लेश को लेसऊ नहीं सुकृत नाम एक बेर जो प्रणाम करे तेहते सकुचतनाम याको मैं कहादेउं अर्थात् एक प्रणामको फल बैकुण्ठादि दीनो सोऊ थोरो मानत हैं ताको साक्षी बिभीषण है जनको टहल तो सकृतनाम एकबार प्रणाममात्र तेहि कर्तव्यता तें महल २ नाम समय २ के ऊपर चारोंजो युग सोईयाम चारि पहरकी राची समानतासो। जो स्वामी जागत है कबहूं गाफिल नहीं होते विशेषतें समय २ के ऊपर जैसे द्रौपदी गजेन्द्रादि को समय जानि रक्षा किये तथा दासके दोषको देखिकरिभी खीझत नहीं गुण समूह सुनि करि रीझत हैं ऐसो स्वभाव जाको जेहके शरण भये तें त्रिजग नाम पशु पच्छी योनि शरीर तामसी जाको सोऊ भालु बानरादि त्रिलोक के तिलक नाम भूषण भये तुलसी कहतहैं कि ऐसे प्रभुको जो न भज्यो ताको बड़ा टेढ़ो भवे यह बूझनो चाहिये॥ १५७॥

मू०। कैसेदेउं नाथहिखोरि। कामलोलुपभ्रमतमनहरिभक्तिपरिहरितोरि। बकुतप्रीतिपुजाइबेपरपूजिबेपरथोरि। देतसिखसिखयौनमानतमूढ़ताअसिमोरि। कियेसहितसनेहजेअघहृदयराखैचोरि। संगबसकियेशुभसुनायेसकललोकनिहोरि। करौंजोकछुधरौंसचिपचिसुकृतशिलाबटोरि। पैठिउरबरबसदयानिधिदंभलेतअंजोरि। लोभमनहिं नचाव कपिज्यौंगरें आशाडोरि। बातकहौंबनायबुधज्यौंबरबिरागनिचोरि। इतेऊंपरतुम्हरोकहावतलाजअंचईघोरि। निलजतापररीझिरघुबरदेहुतुलसिहिछोरि॥ १५८॥

टी०। अपने संसार क्लेश हे।बेको मनकी रिंदगी हेतु है प्रभु को दोषनहीं यह कहत हैं आप औरन्हकों सिखावतहैं औरिन्हको सिखायौ आप नहीं मानत जौन पाप कायमन बचनतें कियेसो हृदय मेंचोराइ रखनो काहूके संगबस जो किंचित शुभकार्यकिये तौलोगन्हको निहोरि करि सुनावनो ऐसी टेढ़ी बुद्धिमेरी जो किंचित्शुभ क्रिया करतहैं। ताको सचिपचि नामबड़े यत्नकरि हृदय बिषे धरतहैं। सुकृत जो पुण्य सो शीला नाम खेत को पड्यो जो दाना ताकों बीनिकरि एकठौर करनो तेहि तुल्य जो पुण्य बटोरयौ अर्थात् थोड़ा ताहूकों दंभ जो पाखण्ड सो, हृदयमो पैठि बरबस नाम हठ करि

अंजोरि नाम खोजिलेतहै अर्थात्‌जोकछ किंचित्‌ पुण्यकियेसो दंभते नाश होतहै बन्दर समान आसारूप डोरीते बांधिकरि लोभ नचावत है पर बात बनाय करि पण्डित की नाईं श्रेष्ठ जो बैराग्य ताकौं निचोरि नाम साराँश रूप कहत हैं। इतने दोषन्ह के पात्र होकरि तब छ तुम्हारो कहावत हूं तौहे प्रभु लाज कों घोरि पिये सो अब निर्लज्जताके ऊपर रीझिकरि हे रघुबर मोकौं संसार बंधनतेंछोड़ायदेव अर्थात्‌ प्राकृत राजा सब भांड अरु बहुरूपी के ऊपर प्रसन्न होकरि अयाची करिदेतहैं तैसें हमजो निर्लज्जभये तोत्रैलोक्यनाथ तुलसीको संसार छोड़ायदेत निर्लज्जहोकरि नाचबेको यही इनाम है अरु ऐसोजीव निर्लज्जनकल करि रिझावने वालेभी महाराजन्ह की सभामें रहतहैं अन्यत्र इनको समाई नहींऐसो बूझिकरि रीझो तथा शरण देव यह बिनय है ॥ १५८ ॥

मू०। हैप्रभुमेरोईसबदोसु। शीलसिंधुकृपालनाथ अनाथआरतपोसु। बेषबचनबिरागमन अघअवगुननि कोकोसु। रामप्रीतिप्रतीति पोलोकपटकरतबठोसु। रागरंगकुसंगही सौंसाधुसंगनिरोसु। चहतकेहरिजसहिसेइस्रगालज्योंखरगोसु। शंभुसिखवनरसनिहू नितराम नामहिं घोसु। दंभहूं कलिनाम कुम्भजशोच सागरसोसु। मोदमंगलमूलअति अनकूलनिजनिरयोसु। राम नामप्रभाव सुनितुलसिहुंपरमसन्तोसु ॥ १५९ ॥

टी०। यद्यपिमेरो सब दोषहै तथापि अपनी ओरदेखि पोसुनाम पालन करो हे प्रभु अपनो दोष देखावतहैं बेषबचनमो तो बैराग्य है अरु मन पाप तथा नाना औगुण को कोसु नाम भंडार है तथा रामजू बिषे प्रीति प्रतीतितो पोलोनाम अबल अरुकपटको करतब ठोसुनाम जबर कुसंग बिषे प्रीति करि रंगे हैं। साधु संगतिमो रोसु नाम क्रोध होतहै सोकैसी मेरी अज्ञता है कि जैसे सिंहके यश को खरगोश नाम ससहा चाहै स्रगाल को सेवन करि अर्थात्‌ ससहा सदृश जो मैं स्रगाल तुल्यकुसंग जोसंसारी जीवन्ह को संग तेहिकरि सिंह रूपजो भगवत्‌ भक्त ताके यशको चाहतहौं तौ स्रगालते लम्हाकय बचैगो अर्थात्‌ यशप्राप्तकी कामना तोरही अपनेः वचनोहीं दुर्घटहै शिवजूकी शिक्षाहै जीव प्रतिकि जिह्वातें निति प्रति रामको घोसु नाम घोखु अर्थात्‌ कहत रहु काहे कि दम्भहूकरि कलिकाल बिषे नामरूप अगस्त्य शोच रूप समुद्र को सोसुनाम सोखत हैं सो

रामनाममोद मंगलको मूलहैअरु निजनाम अपनो जोभक्त तेहि पर सानुकूल निरजोसु नाम ताको महिमा बेजोख अर्थात् बेप्रमाण है यह प्रभाव राम नाम को सिद्वांत तें सुनि करि तुलसी को भी परम संतोष होतहै अर्थात् हे भगवन् आपके नामको अवलंबहै॥ १५९॥

मू०। मैंहरिपतितपावनसुने। मैंपतिततुमपतितपावनदोउबानिकबने। व्याधगणिकागज अजामिलसाखिनिगमनिभने। औरअधमअनेकतारेजातकापैगने। जानिनामअजानिलीन्हेंनरकयमपुरमने। दासतुलसीशरणआयोराखियेआपने॥ १६०॥

टी०। स्वामीते अपनो संबन्ध देखावतहैं बानक नाम बाना यह संबंध करि और उनको कल्याणभयोहै सोकहिकरिजनावतहैं काहु प्रकार जानि करि महिमा अथवा अज्ञान ग्रहण करे तो यम लोक के जोनरकादि को मने होतहैं यह विचारि तुलसी आप के सम्मुख आयो है अपने शरणमे राखो हे रघुवर॥ १६०॥

मू०। तोसे प्रभु जोपैकहूंकोउहोतो। तौसहि निरादरनिशिदिनरटैलटिऐसोघटिकोतो। कृपासुधाजलदानमानिबो कहैसोसांचनिसोतो। स्वातिसनेह सलिलसुख चाहत चितचातकसोपोतो। कालकर्मवशमनकुमनोरथ कबहुं कबहुं कछुभोतो। ज्योंमुदमयबसिमीनबारितजिउछरिभभरिलेतगोतो। जितोदुराउदासतुलसीउरक्योंकहिआवतओतो। तेरेराजराय दशरथके लयेवयेबिनुजोतो॥ १६१॥

टी०। चेतकहोकिऔरकेशरणमेतो हेप्रभु जोआपऐसोस्वामीकोउदूसरो कहूं नाम काहू स्थान मे होतो तो निपट निरादरता सहिकरि रात्रि दिवस रटिरटि लटतहौं सो ऐसो कौन घटती रही अर्थात् जब दूसरो कोउ नहींतब दरवाजे पर पड़िकरि यहतिरस्कार सहत हौं कृपारूप अमृत तुल्य जो जलताके दान के दाता आपहौ मैं जो कहत हौं सोतो सांच निमानिबो नाम सत्यकरि जानो स्नेह तुम्हारे चरणको सोई स्वाती नक्षत्रको करि जोसुखसो जलतुल्यताको मेरो चितरूप जो चातकको पोत नाम बालकसो चाहत है अर्थात् पपीहाकी निष्ठा मेरे चितने ग्रहण कियो है आपके चरण के अनुराग बिना दूसरो जीवन नहीं है बालक कहे ताकोयह तात्पर्य्य है कि प्रबल जो पपीहा सो स्वाती के जल नहीं मिलेतें कोई दिन जीवै भी परबालक को शरीर नाशहोते देरनहीं ऐसो विचारि अबढील

मतिकरो कालकर्म के बसमनको कुत्सित मनोरथ कबहूं काकु भोतो नाम होत है अर्थात् पूर्व पपीहाको निष्ठा कहे ते हतें बिपर्यय बुद्धि कालादिकेप्रबलताकरि कबहूं होति है ताको दृष्टांत दे करि देखावतहैं कि जैसे आनन्द अरुभयतें केवल मछली जलत्यागिकरि उछलेहै फेरि भभरि नाम डरिकरि गोतो लेति है अर्थात् जलके भोतर आनन्दकरे है कबहूं अति आनन्दतें उछलि करि बाहर पड़ी तो फेरि भयतें डूबिजाति है तैसें हम पपीहाकी निष्ठा ग्रहणकरि सुखीरहतहैं कबहूं कुत्सित मनोरथ को उदय ह्वै आवत है सोई मछली को उछलिकरि बाहर आवनो भयोफेर ज्योंमछली डरिकरि डूबिजातहै तथा मैंहूं कुत्सित मनोरथ को त्यागकरि फेर अपने निष्ठा को ग्रहण करत हैं। यह समता है जितनो दुराउ नाम कपट तुलसीदास के हृदयमोहै उतनो क्योंकरि कह्योजाय अर्थात् अधमता मेरी अनन्त है तथापि यह विश्वास है कि तुह्मारे राज्य बिषे हे महाराज दशरथ के पुत्र बिना भोते बोये प्रजा सब खेत काटिलेत हैं अर्थात् आप के प्रभावतें साधन रहित जो जीव सोऊ फलके भोक्ता होतहैं मोको येही आश है॥ १६१॥

मू०। ऐसोकोउदारजगमाहीं। बिनसेवाजोद्रवैदीनपरराममरिसकोउ नाहीं। जोगतियोग बिरागयतनकरि नहिंपावतमुनिज्ञानी। सोगतिदेतगीधशबरीकहंप्रभुनबहुतजियजानी। जोसंपतिदशशीशसाधिकरिरावणशिवपहंलीन्हीं। सोसम्पदाविभीषणकहु अतिसकुच सहित हरिदीन्हीं। तुलसिदाससब भांति सकल सुखंजौचाहसि मनमेरो। तौभजुराम काम सबपूरणकरैंकृपा निधितेरो। ॥१६२॥

टी०। श्रीरामजू सदृश उदार दाता कोऊ नहीं यह मनको उपदेश करतहैं पूर्व कह्यो जो उदारता ताको बिचारिकरि सबप्रकार ते सकल सुखको जो चाहत है रे मेरे मन तो रामजू को भजु सब कामना तेरी पूर्ण करैंगे काहे कि कृपाके समुद्रहैं बिमुख तोको न करेंगे ऐसो प्रतीति करु॥ १६२॥

मू०। एकइदानिशिरोमणिसांचो। जहंयाच्योसोइयाचकतांबसिफिरि बहुनाचननाच्यो। सुरस्वारथीअसुरसुरनरमुनिकोउन देत बिनु पायें। कोशलपालकृपालकल्पतरुबमितसकलयशिरनाये। हरिहू औरअवतारआपनेराखीवेदबड़ाई। लैचिउरानिधिदईसुदामहिं

यद्यपित्रालमिताई। कपिशवरीसुग्रीवविभीषणको। कोनकियोअ-
याची। अबतुलसिहिंदुखदेतदयानिधिदारुणआसपिशाची १६३॥

टी०। दानिन्ह को शिरो भूषण एक सांचो श्रीरघुबर हैं तेहिको जेहि जीवने याच्यो सो याचकतां के बस फेरि बहुत नाच न नाच्यो नाम अनेकन्हतें याचना न कियौ अर्थात् रघुबरके याचेतें आपदानी होतहै तौ औरते काहेको याचै और जो देवादि तेहितें रघुबरकेदान कोपरत्व कहतहैं पहिले तुकसो और देवतन्हतें परत्वकह्यौ अब अन्य भगवत अवतारन्ह तें भी श्रेष्ठ कहत हैं कि हरि जो विष्णु सो औरे अपने अवतारविषे वेदकी बड़ाई राखी नाम किये व्यतिरेक जीवन पावेहै जो देतहै सोई लेतहै यह बेद मर्य्याद है ताकों देखावत हैं कि यद्यपि बाल्य की मित्रता तथापि कृष्णचन्द्र स्वामी सुदामा को निधि नाम सर्ब ऐश्वर्य्य दई पर वेद मर्य्याद रखबे के निमित्त चूरा लैकरि अब श्रीरघुबर की उदारता कहत हैं कपि जो सामान्य त-सब बानर कों काको नाम कौन २ कों अयाचो न कियौ अर्थात् कोल भील अरु अयोध्या के सब प्रजा तथा सब अवतारनतें अधिक उदा-रताको मुख्यहेतु अहल्या है कि जड़ता बस जाने एक बार प्रणामऊ न करी ऐसी उदारता कहि करि अब अपनी विनय करत हैं कि तुलसी की कठिन जो आशारूप पिशाची सो दुख देत है हे दया-निधि यह चुड़ैल को छोड़ावो॥ १६३॥

मू०। जानतप्रीतिरीतिरघुराई। नातेसबहातेकरिराखतरामसनेह-
सगाई। नेहनिबाहिदेहतजिदशरथकीरतिअचलचलाई। ऐसे-
हुंपितुतें अधिकगीधपरममता गुणगरुआई। तियबिरहीसुग्रीव
सखालखि प्राणप्रिया बिसराई। रणपरौ बन्धुबिभीषणहीको
शोचहृदयअधिकाई। घरगुरुगृहप्रियसदनसासुरेभइजबजहंपहु
नाई। तबतहंकहिशबरीकेफलनकी रुचिमाधुरीनपाई। सहज
स्वरूपकथामुनिबरणतरहतसकुचिशिरनाई। केवट मीत कहत
सुखमानतबानरबंधुबड़ाई। प्रेमकनौड़ौ राम सो प्रभु त्रिभुवन
तिहुंकालनभाई। तेरोरिनीहोंकह्योकपीससौं ऐसीमानिहैंको
सेवकाई। तुलसीरामसनेहशीललखिजौंनभक्तिउरआई। तौ
तोहिजन्मिजायजननीजड़तनतरुणतागंवाई॥ १६४॥

टी०। प्रीति की रीति तो केवल श्रीरामजू जानतहैं सब नातें को-हातेनाम त्यागि करि केवल नेहकी सगाई नाम नाता राखतहैं पूर्व

कह्यो जो स्वामी को स्वभावसो प्रमाण दे करि दृढ़ करत हैं सुग्रीव को स्रीविरही जानिकरि प्राणप्रिया जो श्रीजनकनन्दिनी सह रामीताकों बिसरायकिये अर्थात् चारिमहीना प्रवर्षण पर्वतके ऊपर केवल सुग्रीव के सुख देबेके निमित्त रहे तथा लक्ष्मणजू को शक्तिलगी तब बिभीषण को शोच करत भये अपनो घर जे हवरके ऐश्वर्य्य कों देखि इन्द्रादि सिहात हैं गुरु जो बशिष्ठ जू साक्षात् ब्रह्मा के पुत्र अरु परमेश्वर के गुरु ताके गृहमो जहां अष्टसिद्धि नवनिधि दासी ह्वै करि रहति हैं तथा प्रियमन्दिर सासुरे नाम ससुरादि को जहां महाराज जनक जू विद्यमान जाके हाथमों प्राप्तहोऊलोक तहां २ जब पहुनाई भई अर्थात् सामान्य मनुष्यन्ह के पहुनामो विशेष भोजन होत है तहां त्रैलोक्य नाथ के पहुनाई के भोजन को को कहिसके पर तहां २ तीने भोजन के समय यही कहत भये कि जो रुचि अरु जो माधुरी शबरी के बेरनमो मिली सो नहीं प्रेम परबसता को यहअवधि है जाको मङ्गल स्वरूप नाम सतचित आनन्द स्वरूप की कथा वामे बात्ती मुनि सब बखान करत सकुचकरि माथ नवाय कहतहैं अर्थात् मन बुद्धि बानी तें अगोचर जानतहैं सोई रघुबर केवट के मित्र कहे ते सुखमानत हैं बानर जो सुग्रीव ताके भाई कहेते अपनोबड़ाई बूझत हैं महावीर के रिनी भये इन हेतुन्ह करि केवल प्रेमते सनौड़ो नाम परबस होनो यह स्वभाव अद्वितीय सो रामजू ऐसे रामजू हैं दूसरो नहीं तुलसी कहत हैं कि रामजू को शील सनेह लखिनाम जानिऊ करि जो भक्ति हृदयमो न आई तौ रेजड़जीव तोको जननि नाम उत्पन्न करि जांय नाम व्यर्थ माताने अपने शरीरकी जवानी खोई है अर्थात् व्यर्थ जन्म भयो ॥ १६४ ॥

मू०। रघुबररावरियहै बड़ाई। निदरिगनीआदरगरीबपरकरत कृपा अधिकाई। थकेदेवसाधनअनेक करि संपनेहुंनहिंदईदिखाई। केवटकुटिलभालुकपि कौनपकियो सकलसंगभाई। मिलिमुनि वृन्दफिरतदण्डकबनसोचरचौनचलाई। बारहिंबारगीधशवरी की बरनतप्रीतिसुहाई। स्वानकहेतेकियेंपुरबाहर तजीगयन्द चढ़ाई। सियनिन्दक मति मन्दप्रजारज निजनय नगरबसाई। यहदरबाररदीनकोआदररीतिसदाचलिआई। दीनदयाल दीन तुलसीकोकाहुनसुरतकराई ॥ १६५ ॥

टी०। हेरघुवर तुम्हारी इहै बड़ाई है कि गनी जो तालेवर ताको

निरादर गरीब को आदर करि अधिक कृपा करनो पूर्व कह्यो जो गरीब नेवाजी ताको प्रमाण दै करि दृढ़ करत हैं कौनप नाम निशिचर गरीब नेवाजी विषें गिद्ध शबरी को प्रसंग अवधि है स्वानजती अरु अजारज नाम धोबी जो प्रजा ताको प्रसंग पीछे लिखि आये हैं ऐसऊ को निज नाम अपनो नय नाम नवीनता नगर तामे बसायो सर्वथा दूसद रबार विषें दीन जीवन्हको आदर करनो यह रीति चलि आई है तहांमे निरादर होत है हे दीनदयाल सो ऐसो बूझि पड़ै है कि दीन जो तुलसी ताकी सुधि न नाम यादि आप को काहूने न कराई है १६५ ॥

मू० । ऐसे राम दीन हितकारी । अति कोमल करुणा निधान बिनु कारणपर उपकारी । साधनहीन दीन निज अघबस सिला भई मुनि नारी । गृह ते गवनि परसि पद पावन घोर शापते तारी । हिंसारत निषाद तामसबपु पशु समान बनचारी । भेट्यो हृदय लगाय प्रेमबस नहिं कुल जाति बिचारी । यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाय अति भारी । सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये भय टारी । बिहंगयोनि आमिष अहार पर गीध कवन ब्रतधारी । जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब भांत संवारी । अधम जाति शबरी योषित शठ लोक वेद ते न्यारी । जानि प्रीति दै दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी । कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी । सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सहि गारी । रिपु को बंधु बिभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी । शरण गये आगे ह्वै लीन्हों भेट्यो भुजा पसारी । अशुभ होइ जिन्हके सुमिरन ते बानर रीछ बिकारी । वेद विदित पावन किये ते सब महिमा नाथ तुम्हारी । कहं लगि कहौं दीन अगणित जिन्हकी तुम बिपति निवारी । कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ १६६ ॥

टी० । पूर्व कह्यो जो स्वामी को स्वभाव वाही को अनेक हेतु ते पुष्ट करत हैं बिनु कारण नाम जीव की कर्तव्यता बिना उपकार करनो पहिले तुकमे बिनु कारण कृतार्थ करनो कहे ताको अहिल्या मुख्य प्रमाण है कि जाने एक बार प्रणाम ऊ न करी काहे कि पषाण कौन कर्तव्यता करै तेहि को आपै जाय करि कृतार्थ किये यह तुकमे प्रीति की परबसता देखाये जयन्त सकल लोकमे भागि करि गयो तब पिता जो इन्द्र ताके निकट आयो रामजू को द्रोही बूझि इन्द्र ऊ नहीं राखि

सकै तब बाहि २ करि नारदजी के उपदेशतें शरण भयो शोकतें हत नाम नष्टरह्यो ताको भयदूरि किये यह प्रसंग करि शरणागत रक्षकत्व देखाये तहां चेत ऐसो संदेह होयकि शरणभयेपर आंखि फोड़नो यह उत्तम धर्म नहीं है ताको यह हेतु है कि प्रथम बाण छूटि चुक्यौ पश्चात् शरणभयो तौऐसो शास्त्रको सम्मत है कि भगवान को अस्त्रशस्त्र निष्फल नहीं होत यह हेतुते एकनेत्र भंगकरि अपने शस्त्रकी महिमाकों रखिकरि रक्षा किये तथा शास्त्रके सम्मतकरि ऐसो निश्चै होत है कि भगवान प्रति अपराध जो जीवकरे सो बिना दण्डक्षमा करतहैं पर भक्तन्हके अपराधकौं जो करे तौ दण्डबिना माफ नहीं करते सो जानकीमहारानी साक्षात् लक्ष्मी पादसेवन भक्तिकी मुख्य अधिकारी ताके चरणमो चोंचमारि रक्तबहायो तेहिदुष्टकौं इतनो दण्डपरमअनुग्रह है मांसभक्षणकरि हिंसाहोत है सोहिंसासर्वपापको मूलहै यहगृद्धके प्रसंगकरि अधमोद्धारण बाना जनायेपर नाम तत्पर एकतो जातिअधम दूसरे शवरी स्त्री मात्रजो असुचिरूप काहेकि स्त्री शुद्धकबहीं नहीं होति तीसरे शठनाम स्त्रीभावको समुझ नहीं विशेष तें नीचजातिकीस्त्री कौं शठता स्वाभाविकहै चौथे लोक वेदतें न्यारी नामबाहर अर्थात् लोकमो जो स्पर्शकरैतो स्नानादि क्रियाकरि शुद्ध होय तथा वेदऊ निन्दाकरे हैं तेहि शवरीकों कृतार्थ किये दर्शनदै केवलप्रीति अपने विषय जानिकरि यह प्रसंगतें पतितपावन जोबाना ताकौं निश्चय किये सुग्रीव के अर्थ बाली को मारयो गाली सहिकरि अर्थात् बाण लगे पीछें बहुत दुर्वचनबाली कह्यौ है तथा ओटमोह्वै करि मारे यह क्षत्रीको धर्म नहीं लोकवेद दोऊमो निन्दाहै तहां यह संदेह होतहै कि ईश्वर सर्वसामर्थ युक्त सो ऐसो अधर्मकाहे किये तामो यह हेतु है कि बाली को मुनिकों बरदान रह्यौ कि जो कोऊ शत्रु सन्मुख आवे ताको बल बाली मो प्राप्त होय तेहि हेतु अपने निन्दाकौ स्वीकार किये पर मुनि जो अपनो भक्त ताके बरदानको मिथ्या न किये तथा स्वामी यह विचारे कि मेरे दर्शन भये जीवको अज्ञान नहींरहत तो सन्मुखभये बालीनौं शरणहोय तो पूर्व सुग्रीवतें बालीके बधको प्रतिज्ञा किये सो मिथ्या होय मेरी प्रतिज्ञा के मिथ्या भये जगतको नाश होय तथा क्षत्रीको शिकार खेलनो धर्म है तेहिशिकारमो सर्वदा आड़लैकरि पशुमारयौ जात है तेहिते मोकों अधर्म नहीं इनहेतुन्हतें ओटह्वै करि बालीकोंमारे

तथा यह संदेह होयहै कि अपनो कार्य रावणादिको बध सो परिश्रम रहित बालीकरत तब बालीकों छोड़ सुग्रीवकौं क्यौंग्रहणकिये तामें यह हेतुहै कि बालीके ग्रहणकिये दीनबंधुता अपनी नहीं रहत तथा सुग्रीवतें बालीको संबन्धहै काहे कि सूर्यके पुत्रहैं अरु बालीको अवतार सूर्यवंश विषेभयो तो अपनोगे त्यागकरि और को ग्रहणकरनो केवल अपने मतलबके वास्ते यह धर्मशास्त्र विरुद्ध है यह हेतु हृकरि सुग्रीव को शरण दियें यह प्रसंग करि असरण पाना विदित किये अब बिभीषण के प्रसंग करि अरु समुदाय तें बानर भालुमात्र तो विकाररूप तेहि सबके कृतार्थ किये तें दीन बंधुता निश्चयकिये एतेकौ गनाय करि कहतहैं कि असंख्य दीन जीवन्हकी आप बिपत्ति दूरकिये सो कितनो बड़े मलरूप जो कलिकाल सो तुलसीदासको ग्रास करत है तेहि पर काहे आप कृपा को बिसारे यह नहीं बुझिपड़त सो ऐसे नचाहिये यह पद अक्षरार्थ करि सुलभ है तेहितें छोड़ि करि तुकान्ह को अभिप्राय मात्र लिखे प्रथम ॥ १६६ ॥

मू०। रघुपतिभक्तिकरतकठिनाई। कहतसुगमकरनी अपारजाने सोइ जेहिबनिआई। जोजेहिकलाकुशलताकहं सोइ सुलभ सदासुखकारी। सफरीसन्मुखजलप्रवाहसुरसरीबहैगजभारी। ज्यौंसर्करामिलै सिकतामहंबलतेंनकोउबिलगावै। अतिरस सूक्ष्मपपीलिकाबिनुप्रयासहीपावै। सकलदृश्यनिजउदर मेलिसोवैनिद्रातजियोगी। सोइहरिपद अनुभवपरमसुख अतिशयद्वैतवियोगी। शोकमोहभयहर्षदिवसनिशिदेशकाल तहंनाहीं। तुलसिदास एहिदशाहीन संशय निरमूल न जाहीं॥ १६७ ॥

टी०। रामजू की भक्ति करते बड़ी कठिनताई है तहां सन्देह होतहै कि अनेक प्रसंगमें भक्तिकौ सुलभकहे यहां कठिन कहतहैं सो कैसेबने ताको समाधान अगिलेतुकातें कहत हैं कि कथन मात्र में सुगमहै पै भक्ति की कर्तव्यता अत्यन्त अपारहै सोई जाने जेहि तें बनिआई अर्थात् कल्याण जीव को भक्तितें सुलभ करि होत है काहे कि नामोच्चारणादि भक्तिको अङ्ग है तेहितें जीवको कल्याण वेदशास्त्रगावैहै यहितें सुलभकहतहैं अरु भक्तिके जिज्ञासूको कर्तव्यता समुझ अत्यन्त दुस्तरहै तेहितें कठिनहै अरु दूसरो समाधान

करतहैं जो जैसे कालमें प्रवीणह्वैगयो ताकोसो सुलभहै अरुसर्वदा सुखकारीहैत। सो दृष्टान्तदेतहैं किसफरी जोछोटी मछली धाराके सन्मुख चलति है बड़ो उन्मत्त हाथी अति प्रबलसो गंगाजूमें बहि जातहै अब तेहिसमाधानमें दूसरो दृष्टान्तदेतहैं जैसे शर्करानाम चीनी सिकता जोबालू तामें मिलिजायतो अनतें नाम कैसेऊ बल-वानहोय पर बिलग न करिसकै औरहै अतिरसको जाननेवालो सूक्ष्म जोपिपीलिका नाम चिउंटी सो बेपरिश्रम पावैहै तैसेजाको श्रोभक्ति महारानी प्राप्त ह्वैचुकी ताकों सुलभ है और जेहि को प्राप्त नहीं तेहिकों कठिन जानि पड़तहै अर्थात् अधिकारी भेदतें कठिन सुलभ दोऊ कहतहैं अब समाप्तपर्यंत सिद्धाभक्तिको स्वरूप कहत हैं सकल दृश्य जो जगत सो अपने उदरमें मेलिनामप्रवेश करि सोवे पर निद्रात्याग करि ऐसो जो योगी अरु अतिशयकरि द्वैत बुद्धितें वियोग याकों सोई भगवत पद परम सुखरूप ताको अनुभवकरैहै अन्यनहीं अर्थात् उदरतुल्य विचार तामें परमेश्वर ते भिन्न दूसरोपदार्थ कछुहै नहीं यह निश्चय सोई मेलन करनो भयो निद्रा त्यागकरि सोवनो कह्यौ ताको यह अभिप्राय है कि निर्विकल्पिक जो समाधि यामें द्वैतबुद्धिको नाश है सोई सोवनो तुल्य तेहि अवस्थामें प्रकृत निद्राको अभाव है यह हेतु तें निद्रा तजिकहे सोयौ कह्यौ सोसुषुप्तिअरु समाधि दोऊमें द्वैतबुद्धिको लयहै तेहितें सोयबेको समताभयौ तहां सुषुप्तिविषै यद्यपि द्वैत बुद्धिनहीं रहति तद्यपि तमोगुणको आधिक्यहै अरु समाधि विषैं अद्वैत निष्ठा कृत्रिम है अर्थात् समाधि सुषुप्ति सदृश जाग्रत विषैं जब अचल निष्ठाहोय कि परमेश्वरतें भिन्न दूसरी वस्तुकछु तीनों कालमें नहींहै तब भगवत्पद परमसुखरूप प्राप्त होत है ताकों सिद्धाभक्ति कहिये यह अर्थहै कह्यो। जो सिद्धाभक्ति ताको स्वरूप देखावत हैं कि तेहि निष्ठा मे शोकादि को विभाग नहीं रहत अर्थात् जब दूसरी वस्तु नहींतो विभाग केहको होय तुलसीदास कहतहैंकि पूर्वकह्यौ जोदशा तेहिबिना निर्मूल संसार रूपसंशय नहीं जात यह सिद्धान्त है ॥ १६७ ॥

मू०। जौपैरामचरणरतिहोती। तौकतत्रिबिध शूलनिशि वासर
सहते बिपतिनिसाती। जोसन्तोषसुधानिशिवासर सपनेहुं
कबहुंनपावै। तौकतविषयबिलोकिझूठजलमन कुरंगज्यौं

धावे। जौंयौंपतिमहिमाबिचारि उरभजतेभावबढ़ाये तौ कतद्वारद्वाररकूकरज्यौंफिरतेपेटखलाये। जेलोलुप भये दास आसकेतेसबहीकेचेरे। प्रभुबिश्वास आसजीतोजिन्हते सेवक हरिकेरे। नहिंएकौंआचरणभजनकोबिनयकरत हैं। ताते। कीजैक्रपादासतुलसीपरन यनामकेनाते॥ १६८॥

टी०। अब भक्ति प्राप्तको लक्षण कहत हैं कि जोये श्रीराम जू के चरण विषैं प्रीति होती तौ काहे को दिन राति बिपत्ति को निसोती नाम प्रवाह तेहिकरि त्रिविधि शूल सहते जौ सन्तोष रूपो अम्रत रातिदिनमो कबहूं स्वप्नमेंाभी पावे तो काहेको। विषय जोझूठ जलनाम म्रगतुल्य ताकौं देखि यह मन हरिणकी नाईं दौड़े हूं हां द्वारद्वार सहस्र लौकिक पारलौकिक नाना साधन यावत् जगत सम्बन्धी विषयादि सुखकी आशालगीहै तावत् भगवत दास होने को प्रतीति नहीं काहे कि समस्त जगतको दास बन्योहैतब तेहि आशाकौंजीते तब भगवत् दासहोय लोलुपनाम चंचलकेवल नामके नाताकरि क्रपाकरो यह विनय है॥ १६८॥

मू०। जोपोहिंरामलागतमीठे। तौ नवरस षटरसरस अनरसह्वै जातेसबसीठे। बञ्चक विषयबिबिधि तनधरिअनुभवेसुने अरु डीठे। यहजानतहौं हृदय आपने सपनेन अघाइ उबीठे। तुलसिदासप्रभुसौंएकहिबलबचन कहतअतिढीठे। नाम कि लाजरामकरुणाकरिकेहिनदियेकरिचीठे॥ १६९॥

टी०। फेरि पूर्वपद के सिद्धान्त कों दृढ़ करतहैं जो मोकोंराम जूमीठे लगते तो नवरस जोश्रृंगार करुणा शान्त विभत्स भयानक रौद्र वीरहास्य अद्भुत सो प्राक्रत मनुष्य सम्बन्धी अरु षट्रस जोकटु अम्ल लवण तिक्त कषाय मधुर यह जो छवोरस भगवत् निवेदिततें भिन्न तामें रस मानि रह्यौहै सो रस रहित ह्वैकरि सीठे नाम सीठो ह्वै जाते अर्थात् मन एक जो विषय में अनुराग भयौ तौ परमेश्वर विषय प्रीति का करै यह सन्सार सम्बन्धी जितने विषयहैं सो बञ्चक नाम ठगहैं अर्थात् जीवके ज्ञानादि ऐश्वर्यकों हरणकरत हैं यह बिबिधि तनधरि नाम जैसे जैसे कर्म किये तैसे तैसे शरीर धरिकरि अनुभव आपउकिये अरु सज्जनन्ह के मुखकरि सुने तथा डीठे नाम प्रत्यक्ष देखे की विषय सम्बन्ध करि केवल दुखय भोग होतहै यह जानिऊं करि अपने हृदय ते स्वप्नऊं में तेहि विषतें

तृप्ति होकरि मनउबिछ्यो नहीं अपनेमें कोऊ लक्षण आपके शरण मेंरहबेयोग्यनहीं है परतुलसीदास प्रभुसों एकैबलकरि ढीठ ह्वै वचन कहत है कि अपने नामकी लाजकरि हे नाथ करुणाकरि केहकों संसाररूप बंधनतें आपछूटबेकी चिट्ठी न करिदिये अर्थात् यह लोक में प्रसिद्ध है कि जहां २ हाकिम की चौकी रहति है तहांतें चिट्ठी भये व्यतिरेक आगे नहीं जानेपावत जब हाकिम के ओरतें छुट्टी की चिट्ठीहोतिहै तब कोऊ नहीं रोकततद्वत् ॥ १६९ ॥

मू०। यौंमनकबहूंतुमहिंनलाग्यौ। ज्यौंछलछांड़िसुभाव निरन्तर रहतविषयअनुराग्यौ। जौंचितदै परनारिसुने पातकप्रपञ्च घरघरके। त्यौंनसाधुसुरसरितरङ्ग निर्मलगुणगुणरघुबरके। जौंनासासुगन्धरसबसरस नाषट्रसरतिमानी। रामप्रसाद मालजूठनलगित्यौंन लक्किललचानी। चन्दनचन्दवदनिभूषण पटज्यौंचहपांवरपरस्यौ। त्यौंरघुपतिपदपद्मपरसकों तनपातकीनतरस्यौ। ज्यौंसबभांति कुदेव कुठाकुरसेये वपु बचन हियेहूं। त्यौंनराम सुकृततज्ञ सकुचतसुकृत प्रणामकियेहूं। चञ्चलचरणलाभलगि लोलुपद्वार द्वारजगबागे। रामसीय आश्रमनचलतसपनेनभयेश्रमितअभागे। सकलअङ्गपदबिमुख नाथमुखनामकिओटलईहै। है तुलसिहि परतीतिएकप्रभु मूरतिकृपामईहै ॥ १७० ॥

टी०। स्वभाविक मननहीं लगत तामें दृष्टान्त देतहैं अबनेत्र अरु कर्ण अपने उचित विषयमें स्वाभाविक नहीं लागतहैं ताको दृष्टान्तदिये जिह्वा अरु नासिकाकों पूर्ववत् कहत हैं अब शरीर कौं तैसेही बनावतहैं यह तुकमें कायक वाचिक मानसिकतीनौं व्यापार को निन्दा करतहैं अगिले तुकमें चरण कौं धिक्कारदेत हैं बागेनाम फिरते सकल अङ्गनाम सबसाधन तथा आपके पदतें यह बिमुख हैं हे नाथ केवल नामकी ओटलई है सोऊ मुखनाम मुखमात्रते हृदयविषे सम्यक् निष्ठा नहीं तथापि तुलसी कौं एक प्रतीतिहै कि प्रभुकी मूर्ति कृपामय रूपा है ॥ १७० ॥

मू०। कीजैमोकौंजगजातनामई। रामतुमसेशुचिसुहृदसाहिबहि मैंशठपीठिदई। गर्भबासदश मासपालि पितुमातुरूपहित कीन्हों। जड़हि विवेक सुशीलखलहि अपराधिहि आदर दीन्हों। कपटकरौंअन्तर्यामिहुंसौंअघव्यापकहिदुरावौं।

ऐसेहु कुमति कुसेवक पर रघुपति न कियो मन बावों। उदर भरौं किंकर कहाइ, बेच्यो विषयनि हाथ हियो है। मोसे बंचक को ह्यां गाल छल छाड़ि कै छोह कियो है। पल पल के उपकार रावरे जानि बूझि सुनि नीके। भिद्यो न कुलिसहु ते कठोर चित कबहुं प्रेम सिय पी के। स्वामी की सेवक हितता सब कछु निज सांइ दोहाई। मैं मति तुला तौलि देखी भई मेरिहि दिसि गरुआई। एतहु पर हित करत नाथ मेरो करि आयो औ रिकहैं। तुलसी अपनी ओर जानियत प्रभुहि कनौड़ोई भरिहैं ॥ १७१ ॥

टी०। स्वामी को उपकार अपने ऊपर विचारि अरु अपनी विमुखता देखि धिक्कार मानत हैं स्वामी के उपकार को देखावत हैं जड़कों विवेक दियेहु ये अर्थात् बाल्य अवस्था जड़ है सोई आगे शास्त्रज्ञ होतहै अरु युवावस्था में खलई होतिहै तामें सुशीलता तथा वृद्धवस्था अपराधी है काहेकि पौरुषके अभावकरि शुभ कर्मादि को आचरण नहीं करिसकत ताहू को आदर देतहो अर्थात् जबही सन्मुख होय तबही अनुग्रह करतहो एकतो तें अपनी अधमता दूसरेते स्वामीकी कृपालुता जनावतहैं आपको दासकहाय पेटपालन करतहों पर हृदय को विषयन्हके हाथ बेचिदिये ऐसो जो मैं ठग ताहूको आप जो कृपालु सो मेरे छल छिद्ररूप दोष त्यागकरि छोहकियो अर्थात् मनुष्यशरीर दियेहौ तथा जो छोह न करते तो कपटकरि भी आपके नामकी ओट न लेते प्रभु को उपकार नीके प्रकार जानि बूझि सुनिकरि भी कबहूं रघुबर को प्रेम चित में न भिद्यानाम न प्रवेश कियो तो बज्रहू तें अधिक कठोर है अब अपने अधमताकी अवधिदिखावतहैं स्वामीको सेवकविषें हित की कर्तव्यता सो सब लिये अरु अपने स्वामी विषें विषमतारूप जो द्रोहमें कछुलिये मतिरूपी तराजूकरि मैं तौल करि देखी तो मेरीही दिशि गरुआई नाम पलरा नीचेको गयो पूर्वकह्यो जो अपनी अधमाई इतनेहूपरस्वामी हितकरतहैं अर्थात् कृपाकटाक्षकरि न देखते तो यह बुद्धि कैसे होती तथा जन्मान्तर विषें हितकियो है अरु आगे करैंगे यह प्रतीतिहै अर्थात् वर्त्तमानते भूतभविष्य दोऊ को बोध होतहै अपनी ओर जानियत नाम देखतहैं अर्थात् जीव एक बेर प्रणामकरै ताको कल्याण करनो यह मेरोमतहै यह विचारंते प्रभु कनौड़ोई नाम सन्मुखजो

जीव भये। ताते उद्धार नहीं होते तौ तुलसीहू कौं भरिहैं नाम पूर्ण करैंगे यह निश्चय है ॥ १७१ ॥

मू०। कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो। श्रीरघुनाथकृपालुकृपा तेंसंत सुभाउगहौंगो। यथालाभसन्तोष सदाकाहूसोंकछुनचहौंगो। परहितपरत निरन्तर मनक्रम वचननेम निबहौंगो। परुषवचनअतिदुसहश्रवणसुनितेहिपावकनदहौंगो। विगत मानसमसीतलमनपरगुणनहिंदोषकहौंगो। परिहरिदेह जनितचिन्तादुख सुखसमबुद्धिसहौंगो तुलसिदासप्रभुयहि पथरहिअविचलहरिभक्तिलहौंगो ॥ १७२ ॥

टी०। मनोराज्य विनयकरतहैं सन्तन्ह को जो नाना गुणसो कबहूं मोको होयगो ऐसोमनोरथकरि तेहिगुणन्ह को कहतहैंपर गुणतथा दोषनकहूंगो।ऐसोस्वभावहोयगो इहांगुणउनहींकहिबे को यहहेतुहै कि व्यतिरेक दोष देखि गुण दृष्टि नहीं होति तेहि हेतुते दोऊ छोड़नो साधुताहै यहां गुणकहनो दोष नहीं अध्याहार करि यहअर्थहै ऊपरतें साधुकों अनेकगुण कह्योतामें मुख्य जोगुण ताको समाप्तमो प्रार्थना करत हैं देहते उत्पन्न जो चिन्ता सोत्याग करि दुःखसुख दोऊको समबुद्धि करि सहौंगो अर्थात् देह कौं ईश्वर बूझि जब शरीराभिमान छूटै तब दुःख सुखमें सम बुद्धि होय सो जब देहाभिमान गयो तब अन्य जो सबगुण सो तेहिजीव कौं आपै सेवन करत हैं तहां देह जनित चिन्ता छोड़बेको विचार थोड़ोहै पर तामोनिष्ठाहोनो अति कठिनहै सो विचार ऐसो है कि भूत जो व्यतीतकाल ताके निमित्त चिन्ता है नहीं अरु वर्त्तमानमो भोग होतहै यहकीभी चिन्तानहींपर भविष्य जो आवनेवाला काल सो कैसे निबहैगो यहीचिन्तामो जगत् डूबिरह्यो सो साधुगुण परमेश्वर अनुग्रहकरैं तौ यह बुद्धिआवे कि जैसे भूतव्यतीत भयौ अरु वर्तमान बीततहै तैसे भविष्यऊ बीते गो चिन्ताको प्रयोजन है नहीं केवल अज्ञान कारी चिन्ता करतहैं जब ऐसोनिश्चय भयोतो ज्ञातारूपहै यह प्रसिद्धहै कि निश्चितं परमंपदं तुलसीदास विनयकरत हैं कि हेप्रभु जो सज्जन्ह को मार्ग पूर्व कह्यो तेहिमें रहि नाम ग्रहण करि अविनाशिनी जो हरिभक्ति सो पाऊंगो अर्थात् कब ऐसो अनुग्रहकरोगे यह प्रार्थनाहै ॥ १७२ ॥

मू०। नाहिंनआवतआनभरोसो। यहिकलिकालसकल साधनतरु है

श्रमफलनिफरोसो । तपतीरथउपवासदानमखजेहिजोरुचैकरो सो । पाहिपैजानिबोकर्मफलभरि २ वेदपरोसो । आगमविधि जपयोगकरतनरसरतनकाजखरोसो । सुखसपनेहुंनयोगसिधि साधनरोगवियोगधरोसो । कामक्रोधमदलोभमोहमिलिज्ञान विरागहरोसो । बिगरतमनसंन्यासलेतजलनावतआमघरोसो । बहुमतसुनिबहुपंथपुराणनिजहांतहांझगरोसो । गुरुकह्योराम भजननीकोमोहिंलागतरामराजडगरोसो । तुलसीबिनपरतीति प्रीतिफिरिफिरिपचिमरैमरोसो । रामनामबोहितभवसागर चाहैतरनतरोसो ॥ १७३ ॥

टी० । रामनामव्यतिरेकअन्यसाधनतें अपनेकल्याणको प्रतीतिनहीं होत तामें हेतु कि यह कलिकाल विषैं सकलसाधनरूप जो वृक्षसो परिश्रमैं फूलफलैहै अन्य नहीं तपस्यादि जो साधन जेह को जो रुचै सोकरो परिपायेही जानिहौ कि तेहि कर्मको फल मिल्यौ ऐसे तौ वेदने भरि करि परोस्यो है अर्थात् छोटे छोटे कर्म को बड़ो २ फल कह्योहै अब और साधनकी निष्फलता कहत हैं आगम जो नारद पंचरात्रादि तेहि विधि करि जप योग मनुष्य करत है परसो नाम खरासाधकी कार्यनसरत नामनहीं सफलहोत तथा योग साधन की को सिद्धि तेहकरि स्वप्नहुमें सुखनहीं काहेकि नानारोग अरु प्रिय वियोगकरि लोशधरोसो नामधर्योहै अर्थात् सबदिन बन्यो है ज्ञान विराग जो मुख्यसाधन ताको कामादि मिलि करि हरण करत भये संन्यासाश्रम सर्वते श्रेष्ठ जीवके कल्याणको हेतुताको ग्रहण करतमन बिगरतहै जैसे जलके डारेतें आमनाम कच्चाघरो नाम घड़ा अर्थात् संन्यासाश्रमको जो वृत्ति अरु आचरण ताकों ग्रहण करते मनस्थिर नहीं रहत अत्यन्त दुखदेखि चंचल होत है शास्त्रको सम्मत ग्रहण करि आचरण करनो तहां बहुमत सुनत हैं अरु पुराण सब बहुत मार्ग उपदेश करतहैं जहांतहां झगरोई देखि पड़ैहै तेहि हेतु मन स्थिरनहीं होत यह सन्देह मो पर्यो देखिगुरु कह्यो कि राम भजन नीकोमार्गहै ताहीको तू ग्रहणकर सोमोहुको रामराज्य के डगरो नाम सड़क समानलागत नाम बूझिपर्यो अर्थात् सामान्य राजन्हको कियो जो सड़क तामें चलते भयनहीं होत लंगड़ा लूंजासब निब-हतहैं तौ रामराज्य को सड़क तामें चलिकरि निर्विघ्न अपने स्थान कों पहुंचै यामें कहा कहनो तुलसी को यह निश्चय है कि प्रीति

प्रतीति बिनानाना साधनविषें फिरिफिरि नाम कछूदिन औरकिये वाकोंछोड़ि दूसरो कियो तीसरो कियो ऐसो जाको पचि मरनो सो मरो परलोकको संसार समुद्रपार होबेकी इच्छा होसो राम नाम रूप जो जहाज ताको अवलंब करि पारहोउ यह सिद्धान्त है तहां ग्रंथकार को आशय अन्य साधन के निन्दा करिबेमो नहीं है किन्तु कलिकाल प्रभावकरि और सबसाधन सफलनहीं होतेयह व्यासादि महात्मन्हको सम्मत है केवल यह युग मो जीवको कल्याण भगवन्नाम करत है यह अभिप्राय है ॥ १७३ ॥

मू०। जाकेप्रियनराम वैदेही। सोछाड़ियेकोटि बैरीसमयद्यपि परम सनेही। तज्यौपिताप्रह्लादविभीषण बंधुभरतमहतारी। बलि गुरुतज्यौकंतब्रजवनितन्हिभयजग मंगलकारी। नातेनेहराम केमनियतसुहृदसुसेब्यजहांलों। अंजनकहाआंखिजेहिफूटैबहु-तोकहोंकहांलों। तुलसी सो सबभांति परमहित पूज्यप्राणतें प्यारो। जासोंहोयसनेहरामपदएतोमतोहमारो ॥ १७४ ॥

टी०। भगवत विमुखकोउ होयताको त्यागकरनो उचित है चेत कहो कि खेद जोपिता मातादिताकों त्यागकरनो धर्मशास्त्रमो दोष कह्यौहै तेहिपर प्रह्लादादिको प्रमाण देतहैं सो सब जगतके मंगल कारी भये कोऊ तिनको दोष नहीं देत जितने सुहृद अरुसेब्य नाम सेवन करिबे योग्यश्रेष्ठसो सबरामजूके संबंधी होयतौ तिन्हते नाता अरुस्नेहविवेकी मानतहैं काहे कि अंजनदेतहैं सूझबेके निमित्तजेह तें आंखिफूटै तेहि अंजन कोलै कहा करनो अर्थात् पिता मातागुरु सबकी पूज्यता भगवत संबंधकरिकै सोजो भगवानते विमुखकरें तौ शत्रुहैं यह सिद्धांत है बहुत कितनो कहों सब प्रकार सोई हित कारी अरुपूजनीयहै जेहके सहायते भगवतपदमो अनुराग होयएत-नोई तुलसी को मत है ॥ १७४ ॥

मू०। ज्यौंपैरहनि रामसौं नाहीं। तौ नरखर कूकर सूकर सेजाय जियत जगमाहीं। कामक्रोध मदलोभ नींदभय भूखप्यास सब हीके। मनुजदेह सुरसाधु सराहत सोसनेहसियं पीके। सूर सुजान सपूतसुलक्षण गणियत गुणगरुआई। बिनहरि भजन इंदारुनके फलतजतनहीं करुआई। कीरतिकुल करतूतिभूति भलिशीलस्वरूपसलोने। तुलसीप्रभु अनुराग रहित यथसालन सागअलोने ॥ १७५ ॥

टी०। पूर्वसिद्धांतकौं पुष्टकरतहैं मनुष्यशरीर अत्यन्त दुर्लभशास्त्र कहतहै ताको शूकरादि जो नीच पशु ताहूते अधम कह्यौ तासो हेतु कहत हैं कि कामादि जो चेष्टा सो शूकरादि कौं भी होत है मनुष्य के शरीरको दुर्लभता महात्मा सब कहतहैं सो केवल भगवत संबन्ध करि सर्वगुण युक्तहै अरु भगवत विमुख होय तौ निन्दित है तामों वृन्दावनके फलको दृष्टान्तदिये वाहीमों अलोनसागको दूसरो दृष्टान्त दिये शब्दार्थ सुलभ है ॥ १७५ ॥

मू०। राख्योरामसुस्वामी सोनीचे नेहन नातो। एतेअनादर होतहू तैनहातो। जोरेनयेनातेनेहफोकटफीके। देहकेदाहकगाहक हीके। अपनेआपनेको सबचाहतनीको। मूलदुहूंको दयालदूलह सीको। जीवकेजीवनप्राणकेप्यारे। सुखहूकोसुखरामसोबिसारे। कियोकरैगोतोसेखलकोभलो। ऐसेसुसाहिबसौं तूं कुचालक्यौं चलो। तुलसीतेरी भलाईअजहूं बूझे। राढउराउत होतफिरि कैजूझे ॥ १७५ ॥

टी०। जीवकौं उपदेश करतहैं रेनीच रामसे स्वामी सौं स्नेह अरु नातौ न राख्यौ विमुख होकरि संसारमे प्रीति कियौ तेहितें इतनो अनादर होत हू तें नहातो नाम नहीं छोड़त है अर्थात् जहां जहां तें कामना बसयाचतहै तहां तहां निरादर होनोयेही संसार के प्रीतिको फल है नवीन जो नातो अरु स्नेह जोरेनामतैं करत भयो अर्थात् जहां जहां जेह जेह योनिमों जन्म होत है तहां नये नये संबंधी प्रीति के पात्र होत हैं सो सब फोकट नाम मिथ्या अरु फीके नामरसहीन तथा देहके जलावनेवाले अरुजीवके गाहक नामनाशक हैं अर्थात् जो झूठ हैं तौ तिनते कौन रस मिलैगो तथा तेहि सम्बन्धिन्ह के अर्थ नाना जीविका को उपाय करि अनन्त क्लेश होत है तेहिते देहके दाहक कहे अरु तिनहीं सबन्ध के ममता करि भगवत् विमुख जीव होत है यह हेतुतें जीवको नाशक कहे अपने अरु आपने नाम जो कोऊ अपनो प्रिय सम्बन्धी ताको भलौ सब चाहत हैं पर दोऊके भलेको मूलमौ क्षमामूर्ति जानकी नाथहैं अर्थात् आप सम्मुख होय तेहि हेतु अपनो प्रिय परिवार सोऊ परमेश्वर मों लगो तौ लोक परलोक दोऊ मो सबको भलौ होत हैं सो कैसे रघुवर हैं जीवके जीवन नाम अन्तर्यामी रूपतें आधार अरु प्राणके प्यारे नाम जेह के सत्ताबिना प्राण नहीं रहत तथा सुखहू को सुख नाम सब

सुखकी सामग्री स्त्री पुत्र ऐश्वर्य्यादि परमेश्वरकी चैतन्य सत्ता व्यतिरेक सुखदाई नहीं होते ऐसो जो श्रीरामजू ताको तैं विस्मर्ण कियो रे मूर्ख तेरे ऐसे खलको भी भूत काल मों भलो कियो वर्त्तमान मों करे हैं आगे भविष्य मो करेंगे अर्थात् तू विमुख थो है पर मनुष्यको जन्म दै पालन करि सर्वथा भलो करत हैं ऐसे खाविन्द तेरे अधमतू विमुखता रूप कुचाल क्यों चलत है विमुख होकरि जितनो काल बीत्यो सो व्यार्थ गयो तुलसी कहत है कि तेरी भलाई अजहूं बूझैं नाम जितनी आयुर्बल रहि गई है तितनी करि सम्मुख होय तो भलो हो वेमें संदेह नहीं तामें दृष्टान्त देत हैं राउतनाम कातर संग्राम तें जो कईवार भाग्यो सोऊ राउ रावत नाम सिपाही होत है फिरि कै जूझैं अर्थात् मौवेर भाग्यो अन्तमें वीरता करि जूझौ तो परलोकऊ में सूरकी गति होति है तथा यह लोकमें कोऊ कातर नहीं कहत मबहूर कहत हैं यह अर्थ है ॥ १७६ ॥

मू०। जौं तुम त्यागो राम हौं तो नहिं त्यागों। परिहरि पायक काहि अनुरागौं। सुखद सुप्रभु तुम सो जग माहीं। श्रवण नयन मन गोचर नाहीं। हौं जड़ जीव ईश रघुराया। तुम माया पति हौं वस माया। हौं तो कुयाचक स्वामी सुदाता। हौं कपूत तुम हौं पितु माता। जो पै कहूं कोउ बूझत बातो। तौ तुलसी बिनु मोल बिकातो॥१७७॥

टी०। हे रघुवर आप त्याग करैं तौ मैं छोडूंगो नहीं त्याग करबे में हेतु कहत हैं स्वामी को ऐश्वर्य्य अरु खरंचता अपनी परवसता अरु कृपणता कहे हैं जड़पतें मन्दबुद्धिता अनाविकपूत पुत्र के ऊपर पिता की अधिक ममता होति है ऐसो बूझि छोह करो यह अभिप्राय है चेतकहो कि अनेक स्वामी हैं विशेष हम हीं ते हठ करबेको कौन फल सो हेतु सुनो कि अन्य जो नाना देवता ऐश्वर्य्य मान सपूत को शरण देत हैं मोको तो कोऊ काहू स्थानमें जो बातऊ पूछतो तो तुलसी आपके इहां वेमोल विकातो यह कोको है अर्थात् जब कोऊ पूछने वालो नहीं तो अशरण शरण जो आप ताकों छोड़ि कहां जांय॥ १७७॥

मू०। भयेहूं उदास राम मेरे आस रावरी। आरत स्वारथी सबकहैं बात बावरी। जीवनको दानीघन कहा ताहि चाहिये। प्रेमनेम के निबाहेंहै चातक सराहिये। मीनतें न लाभ लेश पानी पुण्य पीन कौं जलविनथलकहांमीच बिनु मीनकौं। बड़े ही की ओट बलि बांधि

आयेछोटेहैं। चलतखरेकेसङ्गअहांतहांखोटेहैं। यहिदरबार भलौ दाहिनेह्वनामको। मोकोशुभदायकभरोसोरामनामको।। कहतनशानोहैहै कियेनाथनीकोहै। जानतक्रपा निधान तुलसीकेजीको है॥ १७८॥

टी०। आप हमते उदास भी रहोपर मोको आपै की आश है बार २ आपते कहत हैं। सो आप बुरोमतिमाने काहे कि आरत अरु स्वारथी जो जीव सो बावरी बात कहत हैं सो मैं तो अपने गर्ज बस स्वारथी अरु संसार के कलेशकरि आरत हौं तो मेरे वचनकों कौनप्रमाण जीवनको दानी जोमेघ ताको कहा चहिये अर्थात् अपने आश्रयो के ऊपर दया करनो उचित है निठुरता न चाहिये जो निठुरता करै है तथापि अपनी ओ.र ते प्रेम नेम के निबाह से चातककी प्रशंसा होति है अर्थात् आपसंमर्थ हौ जो करो सो सब शुभै है पर मोको अपनो धर्म एकाङ्गी निबाहनो चाहिये यद्यपि हमकोऊ कामकेनहीं तद्यपि हमको दूसरी जगह नहींहै जैसेपवित्र जोपानीनाम जलपाननाम पुष्ट अर्थात् निष्काम ताको मछलीते लाभकों लेशऊनहीं पर मछलीते जल त्याग कर ऐसो स्वलकहां है जहांमृत्यु नहोय तद्वत् अपनी अरुमेरी समता जानो आपनभी पूछौगे तौभीमैं कृतार्थह्वै गोऐसी प्रतीतिहै काहे कि लोकमें यह रीति देखिपड़ै है कि ओट लियेते छोटे जीव बांच जातहैं अर्थात् कोऊसामान्य ऐश्वर्यमान काहूमनुष्य को दुख देनो चाह्यौ तबदूसरो उपाय तामें न देख्यौ कहत भयो कि चक्रवर्ती राजाको मैंदासहौं तो नहींभी दासहोय परनामके ओटलियेते दुष्टकृत कलेशते बचिजातहै तैसे संसार रूपी दुष्टते आप के नाम को ओट लैकरि बचिजाउंगो यह निश्चय है दूसरो दृष्टान्तदेत हैं सच्चेरुपये के सङ्गतमहीरुपया एकआध चलिजात है अर्थात् सच्चा रुपया खोटेरुपयेको अपने सङ्गराख्यौनहीं केवल सङ्गकरि खोटऊ खराहोतहै तद्वत् आपन भी अपनोमानोगे तबहूं योरामजूके दास हैं इतने बचनमात्र करियमराजरूप परखियाकेदृष्टिमो हमखोटेन पहिचानेजांयगे यहभावहै प्राकृत राजन्हके इहांसबतरहके मनुष्य रहतहै अरु यहदरबार तो सनातनते भलाबुरो दोऊको अवलंम्ब है जो आपके नाम को भरोसो रहैगो तो सोई विश्वास मोको शुभदेगो वा स्वारथ नाम विषे निशाअपनी कहेताको दोष बूझि